Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

18th September 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

स्वामी अग्निवेश जी का निधन

स्वामी जी को आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

लंबे समय से लिवर सिरोसिस से पीड़ित चल रहे सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश का दिल्ली के एक अस्पताल में कई अंगों के निष्क्रिय हो जाने के बाद शुक्रवार को निधन हो गया। डॉक्टरों ने यह जानकारी दी। वह 80 वर्ष के थे।

उनका अंतिम संस्कार शनिवार को शाम चार बजे गुड़गाँव के बेहेलपा के अग्निलोक आश्रम में किया जाएगा। इससे पहले, उनका पार्थिव शरीर 7, जंतर मंतर रोड स्थित उनके कार्यालय में रखा जाएगा, ताकि लोग अंतिम नमन कर सकें। अंतिम दर्शन करने के लिए आने वालों से कोविड-19 संबंधित निर्देशों का पालन करने का आग्रह किया गया है। डॉक्टरों ने कहा कि अग्निवेश को इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बिलेरी साइंसेज (आईएलबीएस) के आईसीयू में भर्ती कराया गया था और मंगलवार से वह जीवनरक्षक प्रणाली पर थे।

अस्पताल के एक प्रवक्ता ने कहा, वह लिवर सिरोसिस से पीड़ित थे और आज उनकी हालत बिगड़ गयी। उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया तथा शाम छह बजे हृदयाघात आने के बाद उनका निधन हो गया।

उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश को पुन: होश में लाने की कोशिश की गई, लेकिन शाम साढ़े छह बजे उनका निधन हो गया। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, कांग्रेस नेता राहुल गांधी और राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया।

पुरी ने ट्वीट किया, महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाले सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश के निधन के बारे में सुनकर शोकग्रस्त हूँ। उनके प्रशंसकों और अनुयायियों के प्रति मेरी संवेदना है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

बनर्जी ने ट्विटर पर लिखा, सामाजिक मुद्दों पर लड़ने के लिए कोलकाता में प्रोफेसर के रूप में अपना कॅरियर छोड़ने वाले स्वामी अग्निवेश के निधन पर दु:खी हूँ। उनके दोस्तों और अनुयायियों के प्रति मेरी गहरी संवेदना हैं। गांधी ने उनके निधन को देश के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया।

उन्होंने ट्वीट किया, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और आर्य समाज के क्रांतिकारी नेता स्वामी अग्निवेश का आज निधन हो गया। स्वामी जी का निधन आर्य समाज सहित पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है। मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

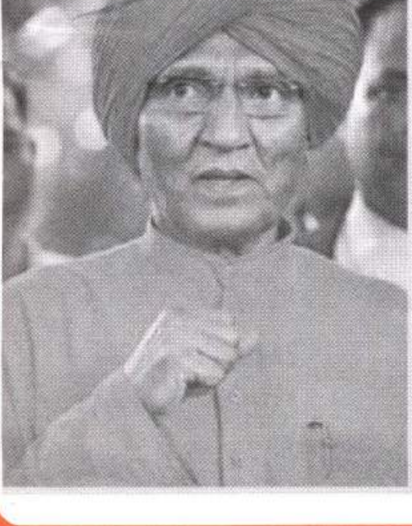

హక్కుల అగ్నివేశ్ ఇకలేరు

అనారోగ్యంతో ఢిల్లీలో కన్నుమూత

పుట్టింది ఏపీలోని శ్రీకాకుళంలో

తండ్రి మృతితో ఛత్తీస్‌గఢ్‌కు మకాం

సామాజిక పోరాటాలకే జీవితం అంకితం

వెట్టిచాకిరీ నిర్మూలనకు అవిరళ కృషి

హరియాణాలో రాజకీయ జీవితం

ఎమ్మెల్యే.. ఆపై విద్యాశాఖ మంత్రి!

తెలంగాణ ఉద్యమానికి పూర్తి మద్దతు

శ్రీకాకుళం, హైదరాబాద్, సెప్టెంబరు 11 (ఆంధ్రజ్యోతి): ఆర్య సమాజ్ నేత, ప్రముఖ సామాజిక కార్యకర్త.. స్వామి అగ్నివేశ్ (80) ఇక లేరు. కొంతకాలంగా కాలేయ సమస్య (లివర్ సిరోసిస్)తో బాధపడుతున్న ఆయన ఢిల్లీలోని ఇన్‌స్టిట్యూట్ ఆఫ్ లివర్ బైలియరీ సైన్సెస్ (ఐఎల్‌బీఎస్)లో చికిత్స పొందుతున్నారు. మంగళవారం నుంచి వెంటిలేటర్‌పై ఉన్న ఆయన ఆరోగ్య పరిస్థితి విషమించడంతో శుక్రవారం (సెప్టెంబర్ 11) సాయంత్రం ఆరున్నర గంటలకు తుది శ్వాస విడిచారు. శరీరంలోని కీలక అవయవాలు విఫలం (మల్టీ ఆర్గాన్ ఫెయిల్యూర్) కావడంతో కార్డియాక్

स्वामी अग्निवेश जी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विभिन्न प्रमुख जन प्रतिनिधियों के सानिध्य में

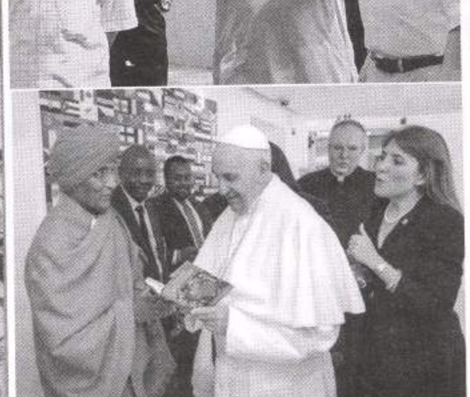

आर्य समाज क्या करे ? किधर जाय ?

-स्वामी अग्निवेश जी

क्या चुनौती मंजूर है ?

आर्य समाज के दो रूप हैं। एक वैचारिक, दूसरा सांगठनिक। वैचारिक स्तर पर यह पूरे मनुष्य समाज के अच्छे लोगों को एक करने तथा बुरे लोगों के खिलाफ निरंतर संघर्ष की प्रेरणा देने वाला जनान्दोलन है। इसमें सभी संप्रदाय, सभी देश, सभी भाषाओं तथा संस्कृतियों के अच्छे लोगों के लिए समान रूप से सम्मानपूर्वक जगह है। आज संचार माध्यमों तथा अन्य वैज्ञानिक तकनालॉजी के विकास के साथ सारी वसुधा बहुत करीब आ रही है पर जितनी जितनी करीब आ रही है उतना ही पर्यावरण तथा पहचान का संकट नई समस्यायें भी पैदा कर रहा है। विज्ञान के तथा प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली ने मानव समाज के सबसे नीचे के दबे कुचले इन्सान के लिए भी स्वाभिमान से जीने की संभावना का दरवाजा खोल दिया है। जागतिक प्रश्नों पर आज जितनी जानकारी और चेतना है, उपलब्ध इतिहास के किसी दौर में इतनी कभी नहीं रही। पर इससे नई चुनौतियाँ भी पैदा हो गई हैं। पुराने विचार और एकांगी समाधान नई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नहीं रहे। आज जरूरत सांगोपांग जीवन दर्शन तथा सार्वभौमिक जीवन मूल्यों के स्थापना की है। यह काम वैचारिक स्तर पर वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिक, विवेक सम्मत तथा वैश्विक व्यवस्था से सरल हो सकता है। आर्य समाज के कंधों पर ऋषि दयानंद ने यही उत्तरदायित्व डाला है। कंटीली झाड़ियों को साफकर महर्षि ने जो राजमार्ग प्रशस्त किया है उस पर चलने की, आगे बढ़ने की और पूरे मानव समाज को **"वसुधैव कुटुम्बकम"** के सूत्र में पिरोकर एक अभिनव सृष्टि की ओर अभिमुख करने की चुनौती है ! पर दुर्भाग्य है आर्य समाज का कि उसका सांगठनिक पक्ष इस सामने खड़ी परिस्थिति का लाभ उठाने लायक नहीं है। इसके विपरीत आज से सौ या पचास साल पहले साम्राज्यवाद की बेड़ियों में जकड़े और आवागमन तथा संचार सुविधाओं से वंचित समाज में कहीं अधिक ऊर्जा और उत्सर्ग का भाव था। आज संस्थावाद, संपत्तिवाद और भ्रष्ट बौने तेतृत्व ने उसके तेजस्वी इतिहास को इतना संकीर्ण और सांप्रदायिक बना दिया है कि आर्य समाज के संगठन-ढांचे को देखकर लगता है जैसे इसकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है। दिनों दिन निर्जीव-निष्प्राण होते इस संगठन को दुबारा खड़ा कर पाना और इस कदर खड़ा कर पाना कि पिछली शिथिलता के दौर की कमियाँ पूरी करता हुआ वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का सफलता से सामना कर सके, बहुत कठिन काम है। मैं इसे असंभव तो नहीं पर बेहद कठिन जरूर मानता हूँ। क्या आर्यों में इस बेहद कठिन काम को करने की संकल्प शक्ति है ? यदि हाँ, तो उनके लिए आगे की पंक्तियों में कुछ रचनात्मक सुझाव हैं। जरूरी नहीं कि उन्हें आंखमूंद कर मान लिया जाय। अच्छा हो कि उन पर स्वस्थ तरीके से बहस हो और जो निष्कर्ष हो उसे मानकर काम शुरू किया जाय।

यदि ऐसी संकल्प शक्ति का नितांत अभाव है तो कम से कम वैचारिक धरोहर की रक्षा करते हुए एक नया संगठन, एक नया आन्दोलन खड़ा किया जाय। संगठन साधन है, साध्य नहीं। साध्य की सफलता के लिए सड़े गले संगठन का मोह तजकर कुछ नये साधन और संगठन का सृजन करना यदि आवश्यक है तो जरूर करना चाहिये। पर ऐसा करने से पहले वर्तमान संगठन और उसकी संकल्प शक्ति की समूची संभावना को टटोल लेना उचित होगा।

हालात का तकाजा है कि तेजी से बदलते-बिगड़ते परिवेश में आर्य समाज की मेधा को सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर इस पुस्तिका में दिये गए कतिपय सुझावों को मद्देनजर रखकर शीघ्र ही बैठकें-गोष्ठियाँ करनी चाहियें। जिन बिन्दुओं पर आम सहमति हो और हमारे युवा साथी (स्त्री अथवा पुरुष) समय देना चाहते हों तो उसकी सूचना हमें भी भिजवाने की कृपा करें। इस पुस्तिका का जहाँ जरूरी हो, अन्य भाषाओं में अनुवाद करा लें। कुछ नये सुझाव हों तो उनका भी स्थानीय स्तर पर समावेश कर लिया जाय। कुल मिलाकर **कुछ करने की आगे बढ़ने की कोशिश की जाय**। निराशा, शिथिलता और दोषारोपण की प्रवृति को बदल कर आशा, विश्वास और परस्पर सहयोग की भावना बलवती की जाय।

परमात्मा की वाणी वेद का आदेश है- **अहम् भूमिम अददाम् आर्याय-** मैं आर्यों के लिए यह धरती देता हूँ। आगे कहा- **वीरभोग्या वसुन्धरा**। इसलिये आओ हम सब इस चुनौती को आज अभी स्वीकार करें। **-अग्निवेश**

आर्य समाज क्या करे? किधर जाय?

स्वामी अग्निवेश जी ने यह पुस्तक १९७६ में एमर्जेन्सी को दौरान जब जेल में बंद थे, उसी समय जेल में ही इस पुस्तक को लिखा था और पश्चात् प्रकाशित करवाकर आर्य जगत में विचारार्थ बटवाया था। पुनः इस पुस्तक को १९९६ में प्रकाशित करवाया था। लगभग ४० वर्ष बाद भी इसमें उल्लिखित विषय विचारणीय हैं और समीचीन भी हैं। आर्य समाज को मजबूत करने के लिए आज भी आर्य बुद्धीजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के संदर्भ में इस छोटी सी पुस्तक के अंश पठनीय, विचारणीय और निर्णय लेने की तरफ दिशा-निर्देश करनेवाले हैं।

-एक बहस-

आज से साल पहले अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक एन्डु जैक्सन डेविस ने पूरब की दिशा में एक दैवी आग देखी थी और कहा था- I see a provithean fire in East. आर्य समाज की स्थापना १८७५ में हुई थी। **पतनशील सामाजिक धार्मिक परिस्थिति के विरुद्ध महर्षि दयानन्द के हृदय में प्रज्जवलित पावन अग्नि आर्य समाज का आन्दोलन बनकर सारे भारत में फैलने लगी थी। डेविस ने कहा था कि आर्य समाज की भट्टी में सुलगती धधकती आग एक दिन सारे संसार के पाप और पाखण्ड को भस्म करके दम लेगी।**

पर ऐसा लगता है जैसे यह आग सारे देश और सारे संसार में फैलने से पहले ही बुझने लगी है प्रकाश के बदले धुँआ देने लगी हैं परन्तु कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि अभी आग पूरी तरह बुझी नहीं है। ऊपर जमी हुई मोटी राख की परत को चीर कर उन्हें जलते हुए अंगारे दिखाई पड़ रहे हैं। उनका विश्वास है कि इस बची हुई आग को सहेजकर, उसमें नई आहुतियां डालकर एक बार पुनः बडवाग्नि दहकाई जा सकती है।

इसके लिए हमें आर्य समाज का राष्ट्रीय स्तरपर पुनर्गठन करना चाहिए। इस पुनर्गठन में हमें आर्य समाज का एक नया तेजस्वी स्वरूप उभार कर लाना होगा, यह नया रूप आर्य समाज में वैदिक विचारधारा की युगानुकू

व्याख्या द्वारा संभव हो सकेगा । इस दिशा में हमें निम्न बातों का ध्यान रखना होगा ।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं की थी । उन्होंने यह कहीं नहीं लिखा था हिन्दुओं का उपकार इस समाज का मुख्य उद्देश्य है बल्कि पूरी जिम्मेदारी से आर्य समाज के छठवें नियम में यह घोषणआ की है **"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है"** महर्षि दयानन्द के इस जागतिक आदर्श को सन्मुख रखते हुए आर्य समाज के दरवाजे सभी के लिए खोल देने चाहिये । **वेद की विचारधारा बहुत उदार एवं सार्वभौम है । वैदिक मान्यताएं आचार परक है न कि कर्मकाण्ड या कोई औपचारिक परिपाटी परक । इसलिए सामान्य रूप से राष्ट्र की सेवा की भावना रखने वाले सच्चे एवं ईमानदार व्यक्तियों की प्रेरित कर आर्य समाज का सदस्य बनाया जाय और उन्हें सम्मानित किया जाय । ऐसे सदस्यों का आर्य समाज में आना जाना और संगठन के विस्तार प्रचार में योगदान देना ही उनकी प्रमुख कसौटी होनी चाहिए ।** आर्य समाजी बनने के लिए बाह्य चिन्हों के परिवर्तन का समस्त आग्रह छोड़कर आर्य समाज के दस नियमों में विश्वास और सदाचार एवं सेवा भावना को प्रधानता देनी चाहिये ।

इतनी ही नहीं आर्य समाज के नेतृत्व को अपने समस्त कार्यक्रम आदि हिन्दुओं मुसलमानों आदि सभी के उपकार की भावना से करने चाहिये । यदि कहीं उनके साम्प्रदायिक स्वार्थ टकराते हों, तो आर्य समाज को आगे बढ़कर उनमें सहयोग एवं समन्वय की भावना का उदय करना चाहिये ।

अभिप्राय यह है कि वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता और महर्षि दयानन्द के विशाल एवं उदार व्यक्तित्व को हमें संकुचित नहीं कर देना चाहिये । यह आर्य समाज का दुर्भाग्य रहा है कि कतिपय साम्प्रदायिक शाखा के रूप में सीमित करने का प्रयास किया है । लेकिन यह भी एक तथ्य है कि आर्य समाज के विचारक तथा युवा कार्यकर्ताओं ने अपने आपको इस प्रकार की संकीर्णता से ऊपर **'विश्वमार्यम्'** की भावना महज एक दिल बहलाने वाला नारा ही नहीं वरन् हासिल करने की एक मंजिल है !

मेरे इस आग्रह का यह कदापि अर्थ नहीं कि हम उदारता के नाम पर अपनी मौलिकता ही गंवा बैठें । इसके विपरीत मेरा यह आग्रह है कि हम अपने मौलिक सिद्धान्तों एवं कार्यक्रमों पर इतनी प्रखरता से अमल करें कि संकीर्णता और सामप्रदायिकता की राख की परत को चीरकर आर्य समाज का तेजस्वी स्वरूप देदीप्यमान हो उठे । तभी हम "संसार का उपकार करना अपना मुख्य उद्देश्य बनाकर मानवमात्र की शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति" में प्रवृत्त हो सकेंगे ।

आर्य राष्ट्र बनायेंगे

आर्य समाज के आन्दोलन का आधार गांव होने चाहियें । गांव में बसने वाले मेहनतकश किसान और मजदूर ही सही मायने में राष्ट्र हैं । भारत के शहर तो गांवों के शोषण पर खड़े हुए हैं । हमारी उदात्त सांस्कृतिक धरोहर के जीवन मूल्यों की रक्षा गांवों ने ही की है । शहरी सभ्यता अपने आप में उखड़ी हुई है और वह हमारी संस्कृति को भ्रष्ट करने के लिए जहरीलें कीड़े पैदा करती है । इसलिए राष्ट्रीय सामाजिक धार्मिक एवं आर्थिक पुनर्सरचना के आधार स्तम्भ हमारे देश के लगभग ५ लाख गांव ही हो सकते हैं । यदि इस मूल बात की उपेक्षा कर हम शहरों के तड़क-भड़क के वातावरण में रमे रहे तो हमारा पतन तो होगा ही, देश भी कभी उठ हीं सकता ।

आर्य समाज के आन्दोलन की सबसे अधिक जरूरत भी गांवों को ही है क्योंकि वहां संगठन और चेतना के अभाव में अंधकार है, जातिवाद और भाग्यवाद की जड़ें गहरी हैं और अन्धविश्वास का बोलबाला है, इन सभी बुराइयों और भाग्यवाद की जड़ें गहरी हैं और अन्धविश्वास का बोलबाला है, इन सभी बुराइयों और कुरीतियों के बावजूद ग्रामीण युवकों और बहनों में ही वह त्याग एवं बलिदान की, निष्ठा एवं साहस की भावना है जिसे उद्दीप्त कर देने पर राष्ट्र क्रान्ति के लिए मचल उठेगा ।

अब तो हमें एक ही मिशन को अपना लक्ष्य बना लेना चाहिये-आगामी ५ वर्षों में भारत के ५ लाख गांवों में आर्य समाज की स्थापना करना । ५ लाख गांवों से रूढ़िवाद और प्रतिक्रियावाद के अन्धकार को मिटाने के लिए वैदिक प्रकाश, उनमें चेतना और संगठन पैदा करने वाले ज्योति स्तंभ खड़े करना- **५ साल में ५ लाख गांवों में "ओ३म" का ध्वज लहराना-वहां की शोषित और पीड़ित मानवता में क्रान्ति के स्फुलिंग पैदा करना-उन्हें एक सूत्र में पिरोकर अगले पांच वर्षों में संघर्ष और बलिदान द्वारा भारत में एक शोषण रहित, विषमता एवं अन्याय रहित समाज की स्थापना करना ।**

ईश्वर की सहायता पर अटूट विश्वास तथा दृढ़ संकल्प लेकर हम इस महान् कार्य की सिद्ध में प्राणपण से जुट जाएं । **वयं जयेम**-हमारी निश्चित विजय है ।

यदि आज ५ नवयुवक भी आज इस कार्य का बीड़ा उठा ले तो ५ से ५०, ५० से ५००, ५०० से ५००० और ५,००,००० होने में देर नहीं लगेगी । पांच लाख निष्ठावान् आर्य सैनिकों की सेना हमे खड़ी करनी है जो पांच लाख गांवों में आर्य समाजों की स्थापना कर समग्र एवं सतत् क्रान्ति की अग्निशिखा प्रज्वलित करेंगे । **अग्निना अग्निं समिध्यते** । आग से आग सुलगती चली जाएगी और यही प्रचण्ड पवित्र अग्नि भड़कती-धधकती हुई भोगवादी पाप और पाखण्ड को भस्म करती हुई क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी ।

आर्य समाज को अब आगे अपने चिन्तन और कार्यक्रम में भारत के करोड़ों भूखे-नंगे शोषितों की आर्थिक समस्याएं भी लेनी होंगी । समस्याओं का व्यावहारिक रूप तो स्थानीय होगा-समाधान भी उसी ढंग से ढूंढ़ना पडेगा पर छोटी-छोटी स्थानीय समस्याओं को अलग-अगल सोंचकर हल करने के बदले हमारे साथी अपने समग्र चिन्तन से उन्हें सारी व्यवस्था परिवर्तन की प्रक्रिया से जोड़कर सामाधान ढूंढेंगे । इस चिन्तन और चेतना की स्थानीय साथियों और जनता के एक-एक आदमी तक पहुँचाना होगा । इसके साथ ही हर समस्या के आर्थिक के साथ सामाजिक, नैतिक एवं राजनैतिक पहलुओं को भी जोड़ना चाहिए ।

वैदिक जीवन दर्शन को वेद की ऋचाओं और ऋषि प्रणीत ग्रन्थो से निकाल कर आम आदमी की झोपड़ी तक पहुंचाना ही हमारा सबसे बड़ा काम है । महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा गाँधी ने इस जीवन दर्शन की सुन्दर और व्यावहारिक दृष्टि से विस्तृत व्याख्या की है । वर्तमान युग में हमारा पड़ोसी देश चीन अपने महान नेता माओत्से तुंग के नेतृत्व में इसी जीवन दर्शन की मूल मान्यताओं को सतत् सांस्कृतिक क्रान्तियों के माध्यम से जन-जीवन में प्रतिष्ठित करने का एक अभिनव

क्रान्तिकारी प्रयोग कर रहा था। पश्चिमी देशों में भी वैदिक संस्कृति के अनूरूप कुछ मौलिक चिन्तन आरंभ हो चुका है। इस दिशा में इंगलैण्ड के प्रमुख अर्थशास्त्री श्री ई.एफ. शुमाकर की प्रसिद्ध पुस्तक है **"स्माल इज़ ब्यूटीफुल"**। इस छोटी सी किन्तु विचारोत्तेजक पुस्तक ने सारे संसार के बुद्धिजीवियों को पश्चिम के आधुनिकी- करण के अन्धानुकरण को छोड़कर जिस सादा जीवन और उच्च विचार की संस्कृति अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री पॉलो फ्रेर की **"पेडागॉगी आफ दि आप्रेस्ड"** आदि तथा जर्मनी के श्री एरिक फ्राम की **दि सेन सोसायटी, "दि एनॉटमी ऑफ ह्यूमन डिस्ट्रक्टिवनेस"** आदि रचनायें वैदिक विचारों के बेहद अनुरूप हैं।

आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को बिना किसी संकीर्णता के विश्व पटल के भिन्न-भिन्न भागों में हो रहे इन प्रयोगों का समालोचनात्मक दष्टि से अध्ययन करते रहना चाहिये और हमें हमारे अपने देश के संदर्भ में क्या उपयुक्त क्या अनुपयुक्त है इसका विश्लेषण भी करना चाहिए। **वैदिक जीवन-दर्शन इतना सर्वांगीण और इतना व्यापक है कि एक ही स्थान पर उसका पूर्ण प्रयोग मिल पाना कठिन है परन्तु फिर भी जब तक हम स्वयं इस दिशा में कोई सफल मौलिक प्रयोग नहीं कर लेते तब तक पूरी उदारता के साथ हमें दुनिया के किसी भी हिस्से में इस सम्बन्ध में कोई उदाहरण मिले तो उसका अध्ययन करना चाहिए।** कई बार ऐसा होता है कि कहीं कोई प्रयोग हमारी अपनी वैध्रिक मान्यताओं के अनुरूप हो रहा होता है पर उसका 'लेबल' कुछ और होता है। जो लोग काम की अपेक्षा लेबल को अधिक महत्व देने वाले होते हैं उन्हें वह प्रयोग अपनी मान्यताओं के विरुद्ध दीखने लगता है और वे उसका विरोध तक करने लगते हैं। आर्य समाज के सजग प्रहरियों को ऐसी ज़हनियत से परहेज करनी चाहिए। कोई व्यक्ति वेद और ईश्वर को शाब्दिक रूप से न मानता हो पर अपने आचरण में उन गुणों का समावेश करता हो जिनका वेद आदि में ग्रहण करने का आग्रह है तो वह व्यक्ति या वह समाज उन लोगों से लाख गुना अच्छा और अनुकरणीय है जो वैदिक धर्मी और ईश्वर भक्ति के अपने पाखण्ड प्रदर्शन में बढ़-चढ़कर हैं, पर आचरण में उन मान्यताओं से कोसों दूर हैं।

नया चिन्तन चाहिए

इस सम्बन्ध में मैं एक और बात की ओर इस महान आंदोलन का ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। दुनिया के कोने कोने में चल रहे इन प्रयोगों से परिचित होने के लिए जरूरी है कि आर्य समाजी पढ़ने की आदत डालें। आर्य समाज जैसे तार्किक और क्रान्तिवाहक संगठन के सदस्यं में अपने और दूसरों का साहित्य पढ़ने, उस पर बाद विवाद करने आदि की जो प्रवृत्ति होनी चाहिये, उसका अभाव दिखाई पड़ता है। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि आर्य समाज और सभाओं की एक दर्जन से अधिक साप्ताहिक मासिक पत्रिकायें निकल रही हैं पर एकाध अपवाद को छोड़कर किसी में कोई बौद्धिक कोई विचारोत्तेजक, कोई युगानुकूल मान्यता पर लेख नहीं मिलते। नया चिन्तन नया लेखन जैसे रुक सा गया है। सामान्य कार्यकर्ता तो बेचारा अपनी आर्थिक समस्याओं में ही उलझा रहता है उसे अधिक पढ़ने-लिखने की सुविधा का अभाव होता है पर बहुत से उन नेताओं का भी बुरा हाल है जो आर्य समाज के ठेकेदार बने बैठे है।

इधर दुनिया बड़ी तेजी से नये-नये प्रयोगां में नई-नई निष्पत्तियों में निरन्तर नई सर्जना की प्रवृत्ति से अग्रसर है और हम हैं कि सौ पचास साल पुराने लेखों और प्रवचनों से ही काम चला रहे हैं। हम यह भूल जाते हैं पचास साल पहले की बात उस समय के लिहाज से बहुत आगे की थी-क्रान्तिकारी थी। पर आज उसी बात को, उन्हीं पुराने मुहावरों को, उसी पुराने लहजे में कहकर हम समय की रफ्तार में पिछड़ गए हैं। सौ साल पहले एक स्कूल या गुरुकुल खोल देना बहुत बड़ी क्रान्ति थी। लड़कियों को पुत्री पाठशाला में भेज देना या बहनों को पर्दे की कुप्रथा से बचा लेना बहुत बड़ी बात थी पर आज दुनिया शिक्षा में ऐसे मूल्य, ऐसा पाठ्यक्रम चाहती है जिससे गुरुकुल का स्नातक अपनी शिक्षा और आजीविका के लिए आत्म-निर्भर बन सके। उसे पढ़ाई के खर्चे और नौकरी के लिए दर-दर की ठोकर न खानी पड़े। पहले वेद की दुहाई देकर हर गृहस्थी को कम से कम दस सन्तान उत्पन्न करने की सलाह बड़े धड़ल्ले से दी जाती थी पर आज हर समझदार आदमी को देश की विस्फोटक जनसंख्या की स्थिति से चिन्तित होना और उसे कम करने का उपाय सोंचना स्वाभाविक ही नहीं अनिवार्य हो गया है।

आज समाज के सामने बेरोजगारी, गरीबी, विषमता, शोषण उत्पादन की कमी, औद्योगि-करण की विकृतियां, वायु, जल प्रदूषण और शोर की समस्या, प्राकृतिक सम्पदा के विनष्ट हो जाने की आशंका, परमाणु शस्त्रीकरण आदि-आदि की विकराल समस्याएं मुँह बाये खड़ी है। लेकिन क्या हम आर्य समाज के मंच से-अपने साहित्य में कहीं इन बातों का वैज्ञानिक ढंग से समाधान दे पाते हैं ?

यदि वैदिक जीवन दर्शन में इन नाना समस्याओं का कोई समाधान न होता और इसलिए हम इन बातों पर सोंचने से इन्कार कर रहे होते तो भी समझ में आने वाली बात थी पर गंभीरत से अवलोकन करने पर यह पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उपरोक्त समस्याओं का एकमात्र समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में ही है। दुर्भाग्य तो यह है कि या तो हम अपनी धरोहर से परिचित हैं या फिर अपने आलस्य और प्रमादवश उसके लाभ से स्वयं को और समाज को वंचित किये बैठे हैं।

एक खास बात इस संबंध में काफी मन को कचोटती है। महर्षि दयानन्द ने वैदिक यज्ञ पद्धति का पुनरुद्धार किया और सूत्र रूप में हमें बताया कि इससे वायुमंडल शुद्ध होता है। आज आर्य समाजों में बड़ी श्रद्धा से यज्ञ भी किये जा रहे हैं। मनों घी और टनों लकड़ियां पूरी श्रद्धा से फूंकी जा रही हैं किन्तु वायु प्रदुषण की विश्वव्यापी समस्या के समाधान में यह यज्ञ कितना वैज्ञानिक और व्यावहारिक है इस पर न हमारा कोई चिन्तन है न कोई साहित्य !

हमें इस बात का बड़ा गर्व है कि महर्षि दयानन्द ने पूरे सौ साल पहले प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली की बात कही थी जबकि उस काल में धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में सामन्तवाद का बोलबाला था पर इस न्यायोचित गर्वोक्ति की सार्थकता इस बात में है कि आज के अपने देश में प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली के संकट से कैसे उबर सकते हैं, चुनाव प्रणाली कैसे निष्पक्ष हो ? न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और कार्यपालिका की पृथकता कैसे रखी जा सकती है ? आदि-आदि समस्याओं पर कोई चिन्तन सारणी दे पाते तथा गोष्ठियों के माध्यम से, साहित्य के माध्यम से कोई तर्कसंगत साँगोपांग व्यवस्था दे पाते।

यह सब हो सकता है बशर्ते हम अपने लिए भी सोचने की कुछ जिम्मेदारी लें। लेकिन मुश्किल तो यह है कि हमने अतीत के गौरव गान में इतनी भक्ति दिखाई है कि भविष्य तो दूर, हमें वर्तमान भी नहीं दीखता। लगता है कि विद्रोही दयानन्द के सैनिक रूढ़िवादी हो गए हैं, युग-दृष्टा दयानन्द के सैनिक दृष्टिहीन हो गए हैं। अपने मन मस्तिष्क को पूर्वजों के पास गिरवी रखकर मानों हम चिन्तामुक्त हो गए। महर्षि दयानन्द जैसे युगपुरुप दिशानिर्देश किया करते हैं परन्तु हर आने वाली पीढ़ी को उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए अपना मार्ग स्वयं ढूंढना पड़ता है-मार्ग बनाना भी पड़ता है। उस पर चलना और गिरकर उठना और फिर चलना यहक्रम निरन्तर जारी रहना चाहिए। युगपुरुप को पाथेय के रूप में स्वीकार करना चाहिए न कि उंगली पकड़कर चलाने वाले पथप्रदर्शक के रूप में। परमपिता परमात्मा ने भी वेद में सूत्ररुप में दिशानिर्देश किया है, उसको युगानुकूल विस्तार देना यह हमारा काम है। लकीर के फकीर होकर जहां एक ओर हम स्वयं अपनी बुद्धि को कुंठित कर डालते है, वहां दूसरी ओर ईश्वर और अपने प्रवर्तक का भी मजाक बना डालते है।

''मास बेस्ड या काडर बेस्ड''

आर्य समाज को जनाधारित आन्दोलन के साथ कार्यकर्ता आधारित भी होना चाहिए। दूसरी शब्दों में हमारा संगठन ।मास बेस्ड' तो हो ही साथ ही 'का बेस्ड' भी होना चाहिए। मुख्य रूप से संगठन के प्रचार प्रसार के लिए ये दो तरीके हैं। जो जनाधारित (मास बेस्ड) होते हैं वे सीधे जनता में जाते हैं उनके प्रचार में मुख्य साधन जलसे और जुलूस होते हैं, जो कार्यकर्ता आधारित (काडर बेस्ड) होते हैं वे जलसे जुलूसों को गौण रखते हुए एक-एक युवक को प्रशिक्षण दे देकर सक्रिय कार्यकर्ता बनाते हैं। कोई भी संगठन विशुद्ध एक ही प्रकार का नहीं होता। जो केवल कार्यकर्ता प्रशिक्षण पर जोर देते है। वे कभी-कभी जलसे जलूस भी करते है और इसी तरह जलसे जलूस वाले भी कुछ अनुभवी कार्यकर्ताओं का महत्व समझते हैं। पर सवाल प्रधानता का होता है और प्रायः संगठनों का झुकाव एकतरफा ज्यादा होता है।

आर्य समाज का अन्दोलन, इस दृष्टि से, जनाधारित ही रहा है। हमारे साप्ताकि सत्संग, हमारे वार्षिकोत्सव, हमारे नगरकीर्तन आदि इस बात की पुष्टि करते है। हम सीधे जनता में अपनी बात फेंकने के अभ्यासी है। हमारे प्रचार की कामयाबी 'हाजिरी' से नापी जाती है। हमारे मंत्री जी और प्रधान जी को सत्संग और उत्सव में 'उपस्थिति' की चिन्ता रहती है और इसके लिये वे पर्चे (हैण्डबिल) बाँटते, लाउड स्पीकर पर मुनादी करते, रोचक चटपटेदार भजनोपदेशक बुलाते, तालियां पीटवा सकने वाले भाषणकर्ता या चुटकले सुनाने वाले प्रवचनकर्त्ता पहले से 'रिजर्व' किये जाते हैं। भाषण देने वाले भी अपने इच्छित और तैयार विषय पर ही बोल-बालकर दक्षिणा समेटी ेर चल दिये। उन्हें अपने श्रोताओं में से छाँटकर किसी विशेष युवक से मिलकर व्यक्तिगत सम्पर्क की, कुछ जिज्ञासुओं के साथ बैटकर गोष्ठी करने की, अपने भाषण को 'फॉलोअप' करने की कोई चिन्ता या जिम्मेदारी नही होती। सुनने वालों की 'भीड़' में जिसके अपने प्रबल संस्कार हो उसने कुछ ग्रहण कर लिया तो उसका भला और जिसने पल्ला झाड़ दिया उसका भी भला। कुछ युवक नजदीक आना भी चाहते हैं तो उनको संभाला नहीं जाता। किसी को फुरसत नहीं है कि उनसे अलग बैठकर दो मिनट बात कर लें। उसे कुछ किताबें पढ़ने को दे दें, उसकी कुछ सैद्धान्तिक और कुछ व्यक्तिगत उलझनों को आत्मीयता के साथ सुलझा दें। यहां सारा प्रचारतन्त्र 'भीड़वाद' पर टिका है। इसमें गुण के बदले गुण की प्रधानता है। होना चाहिये- **'गुणात् गणो गरीयान्'** पर हो जाता है- **गणात् गुणो गरीयान् !!**

पांच-दस साल के अन्तराल में जब कभी आर्य समाज अपने आपको किसी आन्दोलन में झोंक देता हैं तब बेशक कुछ कार्यकर्ता पक जाते हैं। वह भी आन्दोलन को अपनी वजह से नहीं परन्तु संघर्ष शिविरों अथवा कारागारों में चलने वाली विचार गोष्ठियों और संयोगवश किसी तड़प रखने वाले विद्वान संन्यासी आदि के साथ जेल में लगातार सत्संग करने के फलस्वरूप। आज का आर्य समाज उन्हीं कार्यकर्ताओं के बल पर टिका हुआ है जो किसी हैदराबाद आन्दोलन या किसी हिन्दी रक्षा आन्दोलन अथवा गौरक्षा आन्दोलन में संयोगवश तपतपा गये। इसमें कोई शक नहीं कि इस तरह के जनान्दोलन संगठन के लिए पूंजी निर्माण करते है। पर जो संगठन पूंजी को खाकर ही जीना चाहे तो उसका भगवान ही मालिक है।

योजनाबद्ध तरीके से नये कार्यकर्ता तैयार करने का काम इसलिए हमारे सामने सबसे महत्वपूर्ण है। इसके बिना यह पौधा सूख जायगा। यह बेल मुरझा जायगी। इसके लिए हमें अपने प्रचारतन्त्र और कार्यपद्धति तथा संगठन तंत्र में एक मौलिक परिवर्तन करके आर्य समाज को जनाधारित के साथ कार्यकर्ता आधारित भी बनाना पड़ेगा। बल्कि पिछली कमी पूरी करने के लिहाज से आगामी ५-१० साल तो कार्यकर्ता प्रशिक्षण आदि पर अधिक जो देना पड़ेगा। बेशक इस वजह से हमारे जलसे-जुलूस कम हों या उनमें 'हाजिरी' इतनी ज्यादा न हो।

इस कार्य को हमें कई ढंग सेकरना होगा। एक हमारा ऐसा केन्द्र होना चाहिये जहां बारहों महीने प्रशिक्षणार्थियों के शिविर लगते रहे। इसे राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में ही निकसित किया जाना चाहिये। इसके एक विभाग में तो स्थायी प्रचारकों का प्रशिक्षण हो और दूसरे विभाग में पार्ट टाइम प्रचारकों का प्रशिक्षिण हो। जहां स्थायी प्रचारकों का प्रशिक्षण काल दो बर्ष का हो वहां दूसरों के लिए एक-एक महीने के शिविर हों। इन शिविरों में भी कोटियां हों ताकि एक बार प्रशिक्षित कार्यकर्ता दो चार साल क्षेत्र में काम करके दुबारा अपने प्रशिक्षण में वृद्धि करने के लिए आ सके।

नये युवकों के अतिरिक्त अल्पकालीन प्रशिक्षण के मासिक शिविर के लिए देश भर के आर्य समाज के मंत्री-प्रधानों को आमन्त्रित किया जाय। धीरे-धीरे यह परम्परा डाली जाय कि आर्य समाज के मंत्री और प्रधान वे ही व्यक्ति चुने जायें जो कम से कम एक मासिक शिविर में इपरशिक्षित हो चुके हों।

लगभग इसी तरह का क केन्द्र हमारी बहनों की सुविधा के लिए भी अनिवार्य रूप से खोला जाना चाहिए। इसके लिए स्थान कोई कन्या गुरुकुल या कन्या महाविद्यालय उपयुक्त रहेगा।

आर्य समाज के धर्म सिद्धान्त

-लालालजपतराय

जिन धार्मिक सिद्धानतों की ओर हमने संकेत दिया है, उनकी विशद चर्चा एक विगत अध्याय में हो चुकी है। यहां हम उनमें से कुछ प्रमुख शिक्षाओं का विशद अर्थ प्रस्तुत करना चाहते हैं, जो आर्य समाज द्वारा स्वीकृत की गई हैं।

१) आर्यों की ईश्वर विषयक धारणा ही इनमें सर्वप्रथम गणनीय तथा उल्लेखनीय है। यह आर्य समाज के अधिकृत नियमों में द्वितीय नियम में वर्णित हुई है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आर्य समाज ईश्वर में विश्वास रखता है तथा यह मानता है कि एक वही हमारी पूजा और सत्कार का अधिकारी है। हिन्दू शास्त्रों तथा हिन्दू साहित्य के अधिकारी तथा पक्षपातहीन विद्यार्थियों के मनों में इस बात को लेकर कोई संदेह नहीं है कि हिन्दू धर्म में प्रतिपादित एकेश्वरवाद अत्यन्त उच्च कोटि का है, जैसा अन्यत्र नहीं मिलता, जैसा कि वेदों के निम्न उद्धरणों से प्रचुरतया सिद्ध होता है-

ऋग्वेद

१) **इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान् । एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्नियम मातरिश्वानमाहुः ॥**

-ऋ १।१६४।४६

उस ईश्वर को इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि तथा गरूत्मान् कहा जाता है। उस एक ईश्वर का बुद्धिमान् पुरुष अग्नि, यम तथा मातरिश्वन् आदि विभिन्न नामों से वर्णन करते हैं।

२) **अग्ने भूरीणि तव जातवेदी देव स्वधावोऽमृतस्य नाम। याश्च माया मायिनां विश्वमिन्व त्वे पूर्वी सन्दघुः पृष्टबंधी ॥**

-ऋ. ३।२०।३

हे अग्नि तेरे अनेक नाम हैं-असृत, देव, जातवेदा आदि।

३) **त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्तरस्त्वां भ्रात्राय शम्या तसूरुचम्। त्व पुत्रो भवसि यसतेऽवि धत्व सखा शुशेवः पास्याघृषः ॥**

-ऋ. २।१।९

हे अग्नि ! लोग मुझे पिता की भांति स्तुति के लिये पुकारते हैं। हे प्रकाश के आधार, उपासक अपने पवित्र कर्मों से तेरा सहचर भाव प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक तेरी पूजा करते हैं उन्हें तो तू पुत्रतुल्य स्नेह देता है तथा एक विश्वसनीय मित्र की भांति उन्हें बाधाओं से बचाता है।

४) **यः प्राणतो निमिषतो महत्वैिक इद्राजा अगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मे देवाय हविषा विधेम ॥**

-ऋ. १०।१२।३

वही परमात्मा हमारी उपासना का अधिकारी है जो प्राण वाले और अचेतन पदार्थों का एकमात्र स्वामी है, वही दोपायों और चौपायों का भी शासक है।

५) **त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने वि यन्ति वनिनो त वया :। श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्य दिवो दृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् ॥**

-ऋ. ६।१३।१

हे अग्नि ! तुमसे ही सारे वरदान हमें उसी प्रकार प्राप्त होते हैं जैसे वृक्ष से शाखायें फूटती हैं। आप हमें धन, युद्ध में शत्रुओं से लड़ने की शक्ति, द्यौ लोक से प्राप्त होने वाली वृष्टि तथा जल-प्रवाहों को प्रदान करें।

६) **इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छुव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्। इन्द्रोह विश्वा भुवनानि ये मिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः ॥**-ऋ. ८।३।६

इन्द्र ने अपनी शक्ति से द्यौ लोक तथा पृथ्वी लोक का विस्तार किया है। उसकी शक्ति से ही सूर्य प्रकाशित होता है। उसी में सब प्राणियों तथा पवित्र सोम का निवास है।

७) **पुरुष एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥**

-ऋ. १०।९०।२

वह पुरुष परमात्मा ही है जो पूर्व में था तथा भविष्य में सर्वत्र होगा। वह अमृततत्व का स्वामी है तथा अन्न से वद्धित होने वालों से भी परे है।

८) **ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः। मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा मा प्सवः परिषदाम मादुवः ॥** -ऋ. ७।४।६

अग्नि परमात्मा ही विशाल अमृत का स्वामी है वही धनदाता तथा वीरता का प्रदाता है। हे विजयशील ईश्वर, हम तुम्हारे समीप शक्ति शून्य सौन्दर्यहीन तथा उपासना से विरहित होकर न आयें।

९) **यस्येमे हिमवन्तो महत्वा यस्य समुद्र रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥**

-ऋ. १०।१२१।४

हम उसी ईश्वर की भक्ति करें जिसकी महमा का गायन ये हिमाच्छादित पर्वत करते हैं तथा जलप्रवाहयुक्त समुद्र अपनी लहरों के ब्याज से जिसका महत्व वर्णित करते हैं। विशाल दिशायें ही जिसकी भुजायें हैं वही परमात्मा हमारा उपास्य है।

यजुर्वेद

१) **न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्यनाम महद्यशः। हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिसीदि त्येषा यस्मान्न जात इत्येषः ॥** -यजु. ३२।३

उस महान् यश वाले परमात्मा की कोई प्रतिमा, उपमा, प्रतिकृति अथवा तुल्यता नहीं है। उसी का वर्णन 'हिरण्यगर्भ', । मामाहिंसी', तथा 'यस्मान्न जात' आदि ऋचाओं में हुआ।

२) **अग्ने त्वन्नो अन्तमउत त्राता शिवो भवा वरुथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवाअच्छानक्षिद्यु मत्तमै रयिन्दाः ॥** -यजु. ३।२५

हे अग्नि, तुम हमारे निकटतम मित्र बनो, तुम हमारे कृपालु सखा बन जाओ। हे उत्तम अग्नि हमारे निकट आकर हमें प्रशंसित धन प्रदान करो।

३) **देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि पितृकृतस्यै नसोऽ वयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोऽवयजन मस्येन स एनसोऽवयजनमसि। यच्चा हमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वास्तस्य सर्वस्यैनसोऽ वयजम मसि।** -यजु. ८।१३

हम उपासकगण देवकृत, मनुष्यकृत, पितरों के द्वारा किये गये तथा स्वयंकृत पाप को दूर करते हैं। प्रत्येक प्रकार के पाप को दूर करते हैं। जिस पाप कर्म को हमने जानते हुए या अज्ञातपूर्वक भी किया है, उसे भी दूर करते हैं।

४) **तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियजिन्व मवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसाम सदृवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥**

-यजु. १५।१८

हम उस परमात्मा की स्तुति करते हैं जो सर्वोपरि शासक है, जो चेतन तथा जड़ का

स्वामी है, जो आत्मा का प्रेरक है। वह हमारी सम्पत्ति को बढ़ाये। वही हमारा रक्षक, शुभचिन्तक तथा कल्याणकर्ता है।

५) **एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥** -यजु. ३२।४

वही परमात्मा सब दिशाओं में विद्यमान है, वही प्रारम्भ में भी था तथा सभी के भीतर विद्यमान है। वह भूतकाल में भी या तथा भविष्य में भी रहेगा। हे मनुष्य, सर्वतोमुखी होता हुआ वह तुम्हारे समक्ष भी है।

६) **वातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहव शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वसद्वित नो मघवा धात्विन्द्रः ॥** -यजु.२०।२५

इन्द्र परमात्मा ही हमारा रक्षक है, वही हमारा सहायक है, वह वीर इन्द्र ही हमारी पुकार सुनता है। मैं भी उमी इन्द्र को पुकारता हूँ जिसे अन्य बहुतेरे उपासकों ने पुकारा है। वह प्रचुर कल्याणदाता इन्द्र हम पर कृपा करे।

७) **तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेवशुक्र तदब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥** -यजु. ३२।१

वह परमात्मा ही अग्नि है, वह आदित्य है, उसे ही वायु कहते है और वही चन्द्रमा कहकर पुकारा जाता है। वही ब्रह्म है, वही आप और प्रजापति है।

८) **विश्वो देवस्य नेतुर्मर्त्तो वुरीत सख्यम्। विश्वो रायऽइषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥** -यजु. ४।८

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह नेता परमात्मा की ही मैत्री स्वीकार करे। उसे ही सब लोग धन के लिये पुकारते है, समृद्धि के लिये भी उसी का आह्वान करते हैं।

९) **त्वमग्ने व्रतपाऽअसिदेवऽआमर्त्येष्वा। त्व यज्ञेष्वीड्यः। रास्वेयत्सोमाथूयो भर देवो नः सविता बसोर्दाता बस्वदात ॥** -यजु.४।१६

हे अग्नि, आप मरणधर्मा मनुष्यों में व्रतों के रक्षक पालक हैं। पवित्र यज्ञों में आप ही प्रशंसित है। हे सोम, आप हमें यह सब धन प्रदान कीजिये, इससे अधिक भी दीजिये। धनदाता सविता परमात्मा ने हमें धन प्रदान किया है।

१०) **अभत्यदेव सवितारमोण्योः कविक्रतु मर्चामि सत्य सवं रत्न धामभिः प्रियं मति कविम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा ऽअदि द्युतत्स वीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत ॥**-यजु.४।२५

मैं उस सविता की प्रशंसा में स्तुतिगान करता हूं जिसने पृथ्वी और द्युलोक को घेर रखा है। जो बुद्धिमानों की बुद्धि से युक्त है तथा जो श्रेष्ठ गुणों से धन का दाता है। वही हमारा प्रिय विचारशील उपास्य है। मैं उसी के लिये मंत्रगान करता हूं जिसकी प्रेरणा से द्युलोक में प्रकाशमान् नक्षत्र प्रकाशित होते हैं। वही अत्यन्त बुद्धिमान् तेजस्वी पदार्थों का धारक परमात्मा अपनी मेधा से द्युलोक की सीमाओं को नाप लेता है।

११) **स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यव देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्तध्यैर यन्त ॥** -यजु. ३२।१०

वही परमात्मा हमारा बन्धु, जन्मदाता तथा विधाता है। वही लोकों तथा स्थानों को जानता हैं। इस परमात्मा से ही अमरत्व प्राप्त कर देवलोग स्वेच्छापूर्वक उच्च धामों में विचरते हैं।

१२) **यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यो देवा नान्नामधा एकऽएव तं सम्प्रश्नन्भुवना यन्त्यन्या ॥** -यजु. १७।२७

जो हमारा पिता तथा उत्पादक है, जो सबका विधाता है तथा प्रत्येक को स्वकर्मानुसार फल प्रदान करता है, जी सब नक्षत्रों तथा आकाशीय पदार्थों को जानता है, जो सभी दिव्य गुणों वाले पदार्थों का नामकरण करता है, जो एक एवं अद्वितीय है, जिसमें सभी भूतपदार्थ विद्यमान है, हम उसी को नाना प्रकार के मैत्रीपूर्ण विचार-विमर्श के द्वारा जानने का प्रयत्न करें।

१३) **तमिद्गर्भम्यथमन्दभ्रमऽआपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे। अजस्य नाभावध्ये कमर्तिं यस्मिन्न विश्वानि भुवनानि यस्थुः ॥** -यजु. १७।३०

वह परमात्मा जिसमें जीव अथवा प्राणवायु रहते हैं, जिसे प्राप्त करने की इच्छा पवित्रात्मा योगियों तथा प्रकाशित मस्तिष्क वाले साधकों को भी होती है, जो शाश्वत जीवों तथा अणु परमाणुओं से भी सूक्ष्म होने के कारण उनमें विद्यामान है, जों स्वशक्ति से ही विराजमान है तथा जिसमें सम्पूर्ण लोक-लोकान्तर स्थित है, तुम उसे ही जानो।

१४) **परो दिवा परऽएना पृथिव्या परोदेवेभिरसुरैर्य्यदस्ति। किस्विद् गर्भम्प्र थमन्दध्र ऽ आपो यत्र देवा समपश्ययन्त पूर्वे ॥** -यजु. १७।२८

वह वह परमात्मा जो प्रकाशमान पदार्थों से भी परे है, जो पृथ्वी से भी परे है तथा जो बुद्धिमान प्राणियों की पहुंच से भी दूर है, वही अज्ञ लोगों की बुद्धि से भी दूर है, उसी में प्राणशक्ति के द्वारा इच्छित पदार्थों का धारण किया जाता है। उसे ही, बुद्धिमान लोग जो ज्ञान तथा बुद्धि में समृद्ध है, जान सकते हैं। तुम भी उसे ही जानने का प्रयत्न करो।

१५) **यथेमां वाचं कल्याणीं भावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्रायचार्यायच स्वाय चारणाय ॥** यजु. २६।२

परमात्मा जिस प्रकार अपनी कल्याणी वाणी लोगों के लिये प्रदान करता है, ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिये, शूद्र के लिये तथा अन्य निम्न वर्णस्थ लोगों के लिये उसी प्रकार मनुष्य का भी कर्त्तव्य है कि वह वेदवाणी का प्रचार सर्वत्र सब लोगों में करे।

अथर्ववेद

यो भूतं च भव्यं च सर्व यश्चाधि तिष्ठति। स्वर्यस्य व केवल तस्मै ज्येष्टाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॥१०।८।१

उस सबसे ज्येष्ठ परमात्मा को हमारा नमस्कार है जो भूत तथा भविष्य का शासक है, जो समस्त विश्व का शासक है, जो स्वयं सुखरूप है, तथा यह सुख एवं आनन्द ही जिसका अपना रूप है। यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्ष मुतोदरम।

दिवं यश्चक्रे सूर्धान तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॥१०।७।३२

यह भूमि जिसकी प्रमा (नापने का पैमाना) तथा अन्तरिक्ष जिसका उदरस्थानीय है, जिसने द्यौलोक को अपने मूर्धा (मस्तक) तुल्य बनाया है, उसी ज्येष्ठ ब्रह्म के लिये हमारा नमस्कार है।

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः। अग्नि यश्चक्रं आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॥१०।७।३३

सूर्य और चन्द्रमा (जो बार-बार उत्पन्न होता है, जिसके चक्षु स्थानीय हैं तथा अग्नि को जिसने अपना मुख स्थानीय बनाया है, वह ज्येष्ठ ब्रह्म हमारा नमस्कार स्वीकार करे।

यस्यवातः प्राणापानौ चक्षुरगिरसो भवन्। दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॥१०।७।३३

सूर्य और चन्द्रमा (जो बार-बार उत्पन्न होता है), जिसके चक्षु स्थानीय हैं तथा अग्नि

को जिसने अपना सुख स्थानीय बनाया है, वह ज्येष्ठ ब्रह्म हमारा नमस्कार स्वीकार करे ।

यस्यवातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसो भवन् । दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॥१०।७।३४

जिसने वायु को प्राण और अपान प्राणों का धारक बनाया, तथा प्रकाश की किरणें जिसके नेत्र स्थानीय हैं, दिशायें ही जिसकी श्रोत्रेन्द्रियों के तुल्य हैं, उस ज्येष्ठ परमात्मा के लिये हम नमस्कार करते हैं ।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । न पञ्चमो न षष्ठः नाप्युच्यते । नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते । स सर्वस्मै विपश्यति यच्च प्रणति यच्च न । तमिदं निगत सहः स एष एक एक वृदेख एव । सर्वे अस्मिन् देवा एक वृतो भवन्ति ॥ ।१३।४।१६-२१

वह परमात्मा एक ही है, वह न दूसरा और तीसरा, न चौथा और पांचवां, न छठा और सातवां, न आठवां और न नवां तथा न ही दसवां है । वह उस सभी को देखता है जो प्राणधारी तथा प्राण शून्य हैं । वह विजयिनी शक्ति उसे ही प्राप्त है । वही सब कुछ, सरलतम तथा एक है । उसी में सब देव एक वृत्त हो जाते हैं ।

यावती द्यावा पृथिवी वरिम्णा यावदापः सिष्दुर्यावदग्निः । ततस्त्वम् ॥ यावतीर्दिशः प्रदिशो विषूचीर्यावतीराशा अभिचक्षणा दिवः । ततस्त्वम् ॥ ज्यायान् निमिषतोसि तिष्ठतो ज्यायान्त्समुद्रादसि काम मन्यो । ततस्त्वम् ॥ -अथर्व. ९।२।२०, २१, २३

पृथ्वी और द्योलोक की जो सीमा है परमात्मा उससे भी महान् है, जहां तक जल प्रवाहित होते हैं तथा अग्नि प्रकाश करती है परमात्मा उससे भी आगे है, जहां तक दिशा-प्रदिशाओं का फैलाव है तथा जहां तक प्रकाशमान् नक्षत्रों का क्षेत्र है, हे परमात्मा, तू उससे भी बड़ा है, तू उनसे भी शक्तिशाली है, जो नक्षत्र आदि तेरे समक्ष खड़े हैं अथवा चमकते हैं । तू सागर से भी बलशाली है । तू ही काम है, तू ही मृत्यू है, हम तुझे ही अपनी भेंट-पूजा अर्पित करते हैं ।

सर्व तद्राजा वरुणो वि चप्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात् । संख्याता अस्यनिमिषो जनाना मक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि ॥ -अथर्व. ४।१६।५

यह वरुण राजा उस सबको देखते हैं, जो पृथ्वी तथा द्योलोक के बीच तथा उससे परे भी है । वह मनुष्यों के नेत्रोन्मेषों की भी गिनती रखता है । द्यूतक्रीडा करने वाले की भांति वह भी पासों को फेंककर सब वस्तुओं को स्थिर बना देता है ।

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजा पतिः । तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्य जुह्वति जुहूतस्त्वे ॥ -अथर्व. १७।१।१८

हे परमात्मा तू इन्द्र है, तू ही महेन्द्र है, तू ही लोक है और तू ही प्रजापति है । तेरे लिये ही यज्ञ कर्म किये जाते हैं । याज्ञिक लोग तेरे लिये ही हवि प्रदान करते हैं ।

सोर्यमा स वरुणः स रूद्रः स महादेवः । सो अग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः ॥ -अथर्व. १३।४।४-५

व परमात्मा ही अर्यमा (नियामक) वरुण (शासक), रुद्र (दुष्टो का दमन कर्त्ता) तथा महादेव है । वही अग्नि (प्रकाशमान्) सूर्य (द्युतिमान) तथा महायम (न्याय विधाता) है ।

इस प्रकार तीनों वेदों में एकेश्वर तथा उसी की उपासना के इन मंत्रों से यह स्पष्ट है कि वर्तमान हिन्दू धर्म का बहुदेवतावाद तथा मूर्तिपूजा वेद के सर्वथा विरुद्ध है ।

२) आर्य समाज यह मानता है कि कुछ व्यक्ति (स्त्री और पुरुष) अपने भीतर विशेष आध्यात्मिक शक्ति अनुभव करते हैं परन्तु वे कभी ईश्वर के तुल्य नहीं हो सकते । उनमें अपूर्णता तो रहती ही है । इन व्यक्तियों को अन्य सामान्य कोटि के व्यक्तियों से अधिक पैगम्बर, गुरु, नेता अथवा महापुरुष के तुल्य सम्मान तो मिलना ही चाहिए परन्तु पुरातन ईसाई मत की धारणा के अनुसार उन्हें ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में नहीं माना जाना चाहिए । आर्य समाज की मान्यता है कि ये उच्च शक्ति सम्पन्न पुरुष मानव जाति के उन्नायक तथा हितेच्छु होते हैं । इस कोटि के पुरुष चाहे किसी राष्ट्र, रंग अथवा मत सम्प्रदाय के हों, प्रत्येक पुरुष से सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी होते हं तथा ऐसे व्यक्तियों और उनके विचारों के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप लोगों को सब प्रकार की सहायता तथा प्रकाश प्राप्त होता है । परन्तु साथ ही यह मानना होगा कि प्रत्येक व्यक्तिगत जीवात्मा का मोक्ष स्वयं उसके प्रयत्नों पर ही निर्भर है और किसी अन्य व्यक्ति में विश्वास करने मात्र से ही उसकी मुक्ति नहीं होती । आर्य समाज की यह मान्यता उसे प्रचलित हिन्दू धर्म तथा प्रचलित ईसाई मत के सीधे विरोध में प्रस्तुत करती है ।

३) आर्य समाज यह नहीं मानता कि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि में ऊंचा होने पर भी पाप या भूल से सर्वथा मुक्त रह सकता है । "मनुष्य से भूल स्वाभाविक है" इस उक्ति को शाब्दिक तथा व्यापक अर्थों में स्वीकार किया गया है ।

४) उपासना की स्वीकृत प्रणालियों के रूप में स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना को स्वीकार किया गया है । इसके साथ मन, वचन और कर्म की पवित्रता भी अपेक्षित है । प्रायश्चित की एकमात्र स्वीकृत विधि पश्चाताप है । जिसमें यह दृढ़ भावना निहित होनी चाहिए कि जब में पुनः कभी पाप नहीं करूंगा । इसके साथ ही पाप कृतियों के कारण प्रभावित आत्मा को पवित्र करने तथा उसे उर्ध्वमुखी बनाने के लिये उचित यज्ञ तथा अन्य विधान किये जा सकते हैं ।

५) आर्य समाज कर्मसिद्धान्त में विश्वास रखता है ।(वैदिक प्रमाणों के लिए स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश तथा १९११ का पंजाब का जनगणना विवरण (पृ. १०८ की पाद टिप्पणी) दृष्टव्य है ।) जिसके अनुसार सभी कर्मों के फल भोगने ही पड़ते हैं तथा कर्म फल से किसी भी प्रकार मुक्ति नहीं मिल सकती । जैसा कि शास्त्रों में एक स्थान पर कहा गया है-कर्म अपने फल को उत्पन्न किये विना समाप्त नहीं होता, यहां तक कि लाखों वर्षों के पश्चात् भी मनुष्य अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल भोगता है । इसी सिद्धान्त की परिणति पुनर्जन्म की मान्यता में होती है, जो आर्य समाज के सिद्धान्त का एक प्रमुख तत्त्व है ।

६) आर्य समाज भाग्य में विश्वास नहीं करता जब तक कि इस भाग्य को कर्माश्रित न स्वीकार कर लिया जाय । प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की शाश्वत व्यवस्था के अनुकूल तथा कर्म-सिद्धान्त के अन्तर्गत स्वयं ही अपने भाग्य का निर्माता है । कर्म उचित और ईमानदारी से किया कर्म, जो विश्वास तथा श्रद्धा पर आश्रित है, यही वह शक्ति है जो पहले किये कृत्यों के प्रभाव की नष्ट करती है । अकर्मण्यता तथा भाग्यवाद की शरण जाना तो मृत्यु ही है ।

७) स्वामी दयानन्द हिन्दुओं में प्रचलित रीति की पितृपूजा को नहीं मानते । उनकी सम्मति में मृत पितरों में वे ही हमारी स्नेह भरी याद, सम्मान तथा श्रद्धांजलि प्राप्त करने

के अधिकारी हैं जो अपने जीवन काल में धार्मिक रहे, जो देश तथा जाति के महान् नेता तथा विद्वान् एवं शुभचिन्तक थे। परन्तु वे जीवित माता-पिता तथा पितामह आदि की सेवा-सत्कार करने का आदेश देते हैं।

८) आर्य समाज वेदों को निर्भ्रान्त एवं प्रमाणिक मानता है तथा प्रत्येक नर-नारी से यह अपेक्षा करता है कि वह वेदों को जानें तथा दूसरों के हित के लिये उनका प्रचार भी करें। जैसा पहले बताया जा चुका हैं, आर्य समाज वेदों की व्याख्या करने की स्वतन्त्रता इस शर्त के साथ प्रत्येक व्यक्ति को देता है कि वह व्याख्या करने के सर्वज्ञात नियमों का पालन करेंगे। प्रगतिशील व्याख्या करने का यह सिद्धान्त आर्य समाज के कतिपय नेताओं द्वारा स्वीकार किया जा चुका है।

आर्य समाज के धार्मिक सिद्धान्त उपरि-लिखित ही हैं।

४) **धार्मिक कर्मकाण्ड और आचार पद्धति**

इनके अन्तर्गत आर्य समाज निम्न नियमों को यथावत् स्वीकार करता है और उन पर चलने की आज्ञा देता है-

१) दैनिक पञ्च महायज्ञ-पांच प्रमुख धार्मिक कृत्य जो नित्य प्रति किये जाने चाहिए।

अ) **ब्रह्मयज्ञ-**यह दो प्रकार का है। संध्या और स्वाध्याय। संध्या प्रातः और सायंकाल की जाने वाली ईश्वर की पूजा है। जिसमें ध्यान, धारणा तथा प्रार्थना के तत्त्वों का समावेश है। स्वाध्याय के अन्तर्गत शास्त्रों के किसी अंश का नित्य पाठ आता है।

आ) **देवयज्ञ-**इसे प्रसिद्ध 'होम' के नाम से जाना जाता है। जिसमें धृत्त अन्य सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में डाला जाता है। हिन्दुओं का यह एक सर्वाधिक प्राचीन कृत्य है। हिन्दुओं का कोई भी संस्कार किसी न किसी रूप में हवन के बिना पूर्ण हुआ नहीं माना जाता। इस क्रिया के अन्तर्गत वेद के जिन मन्त्रों को पढ़ा जाता है वे इन ग्रन्थों के सर्वोत्कृष्ट तथा उदात्त अंश हैं। एक हिन्दू का दिन होम के कृत्य से ही प्रारम्भ होना चाहिए जो उसके गृहस्थ को भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टियों से पवित्र कर देता है। हिन्दू इतिहास में कोई ऐसा युग नहीं था, जब कि इस यज्ञ प्रथा को त्यागा गया। हिन्दू धर्म की अवनति के साथ साथ प्रत्येक गृहस्थ द्वारा नित्य हवन किये जाने की प्रथा भी समाप्त हो गई है, उसी प्रकार जैसे अन्य दैनिक यज्ञ समाप्त हो गये। (१. यज्ञ की व्याख्या के लिये मैक्समूलर का ग्रन्थ (Physical Religion) (मैक्समूलर की ग्रन्था-वली) १८९८ पृ. १०७-१०८ द्रष्टव्य है।)

इ) पितृयंज्ञ (पितरों की पूजा)-इस यज्ञ का अभिप्राय अपने माता, पिता की नित्य की जाने वाली सेवा से है, ऐसा न हो कि हम अपनी तथा परिवार को देखभाल करते-करते माता पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य को विस्मृत कर बैठें। राज्य द्वारा वृद्धावस्था में पैन्शन मिलने की व्यवस्था के अभाव में यह प्रथा वृद्ध पुरुषों की रक्षा को सुनिश्चित कर देती है।

ई) अतिथियज्ञ-किसी विद्वान् अथवा तपस्वी को जिसे पूर्व से ही आमंत्रित नहीं किया है, भोजन कराना अतिथियज्ञ है। परन्तु यह भी नैत्यिक कर्त्तव्य है। हिन्दू कानून में ब्रह्मचारी, विद्यार्थी तथा तपस्वी विद्वान् वानप्रस्थी की सहायता के लिये कोई व्यवस्थित संगठन बनाने का विधान नहीं है। गृहस्थियों से ही यह आशा की जाती है कि वे इन लोगों की देखभाल तथा सेवा करेंगे। अपनी व्यक्तिगत स्वार्थवृत्ति अथवा उपेक्षावृत्ति पर नियंत्रण रखने के लिये प्रत्येक गृहस्थी के लिये यह आवश्यक समझा गया है कि वह एक या दो उन छात्रों अथवा विद्वानों का भोजन से सत्कार करे जो धर्म प्रचार में संलग्न रहते है। ऐसे व्यक्ति जो विद्या प्रसार तथा धर्म प्रसार के कार्यों में लगे रहते हैं; उन्हें अपने परिजनों को भोजन कराने के पूर्व खिलाना तथा उनकी पूर्ण देखभाल करना एक पवित्र धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाता था। प्राचीन हिन्दू धर्म में सुव्यवस्थित तथा आर्थिक दृष्टि से सुगठित संस्थानों की परिकल्पना नहीं थी, परन्तु वह प्रत्येक से यह अपेक्षा रखता था कि एक व्यक्ति अपने जीवन के प्रारम्भिक पच्चीस वर्ष अध्ययन में व्यतीत करे तता अन्तिम वर्षों को धर्मप्रचार तथा मानवजाति की सेवा में बिताये। ऐसे लोगों के जीवन धारण का दायित्व प्रत्येक गृहस्थी को एक या अधिक अतिथियों को भोजन कराने का कर्त्तव्य सौंप कर पूरा किया जाता था। यह स्वैच्छिक व्यवस्था ब्रिटिश गृहस्थों द्वारा स्कूली बच्चों को भोजन देने तथा शिक्षा प्रदान करने के लिये एकत्रित किये जाने वाले अनिवार्य चन्दे से कहीं श्रेष्ठ है। पुनः गृहस्थों को यह भी आदेश दिया गया है कि वे स्वयं बाहर जाकर ऐसे अतिथियों को अपने घर पर लायें तथा उन्हें भोजन करायें ताकि वे स्वयं को दूसरों की दया का पात्र न समझें तथा लज्जा का अनुभव न करें।

उ) पञ्चम और अन्तिम नित्य का कर्त्तव्य यह बताता है कि मानव भी ग्राम्य पशुओं पर निर्भर रहता है, अतः दरिद्र, असहाय एवं अनाथ के प्रति भी उसका कुछ न कुछ कर्त्तव्य है। इस यज्ञ के विधान के अनुसार अपनी सामर्थ्य के अनुसार ऐसे ग्राम्य पशुओं तथा दीन दुखियों को भोजन प्रदान किया जाता है।

२) **सोलह संस्कार-**गर्भाधान से लेकर मृत्यु के उपरान्त अन्त्येष्टि पर्यन्त संस्कार धार्मिक पवित्र कृत्य है। यह कर्मकाण्ड समान्यतया अत्यन्त सरल तथा प्रेरणादायी होता है। इसमें कुछ भी नवीनतम नहीं है। यह आर्यों जितना ही प्राचीन है तथा पुरातन धर्मशास्त्र प्रणेताओं ने इसके नियमों का निर्धारण किया है। संस्कारों में परवर्ती युग में किये गये सभी प्रकार के परिवर्द्धन, वृद्धि तता रूपान्तरण त्याग दिये हैं। संस्कारों में उसी विधि को रखा गया है जो हिन्दू विचारधारा के सभी सम्प्रदायों में सामान्य रूप से स्वीकृत थी तथा जो सभी प्रकार की मूर्तिपूजा से मुक्त थी। सभी प्रकार के अन्ध-विश्वासपूर्ण कृत्य पृथक् कर दिये गये हैं। प्रत्येक मानव की जीवन यात्रा में ये सोलह संस्कार सोलह मील के पत्थरों के तुल्य हैं, अतः प्रत्येक गृहस्थ को अपनी शक्ति के अनुसार इन्हें किञ्चित महत्व प्रदान करते हुए, तथा निश्चित औपचारिकता एवं प्रदर्शनात्मक भाव के साथ आयोजित करने चाहिये।

यही वह कर्मकाण्ड है जो आर्य समाज द्वारा स्वीकृत है तथा जिसे स्वामी दयानन्द ने अपने संस्कारविधि नामक ग्रन्थ में एतद् विषयक प्राचीन प्रमाणों के आधार पर संकलित किया है। ...

गुलबर्गा में चौथा आर्य सम्मेलन और पुलिस की गुंडागर्दी

-पं. नरेन्द्र जी

गुलबर्गा में २२, २३, २४ एप्रिल १९४५ को चौथा आर्य सम्मेलन हुआ। इसे एक ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त है क्योंकि इस सम्मेलन में निज़ाम सरकार की बढ़ती हुई सामप्रदायिकता का निडरता के साथ सामना किया गया। यह चौथा आर्य सम्मेलन राजा नारायणलाल जी पित्ती की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन घनश्यामदास जी गुप्त ने किया।

श्री गुप्त जी को भाषण देने की अनुमति नहीं दी गई। उनका भाषण पढ़कर सुनाया गया। स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण जी पटेल थे और मुझे मन्त्री चुना गया। इस सम्मेलन को येनकेन प्रकारेण असफल बनाने के लिए पुलिस ने नाना षड्यन्त्र रचे थे। इस षड्यन्त्र का मूर्तरूप दंगे के रूप में प्रकट हुआ। पुलिस ने सर्वप्रथम श्री हीरालाल जी जो सभा कार्यालय में कार्य करते थे, उन्हें बुरी तरह घायल किया। इसके बाद अधिकारियों से बातचीत करने का ढोंग रचा गया। पंडाल के बाहर बातचीत हो रही थी कि पुलिस ने पंडित विनायकराव जी विद्यालंकार, श्री गणपतकाशीनाथ जी शास्त्री और मुझपर हिंसक आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के कारण विद्यालंकार जी तथा काशीनाथ जी शास्त्री को भारी चोटें आई। मेरे सिर पर गहरी चोट लगी और पाँच की हड्डी टूट गई। इसके साथ ही गुलबर्गा-भर में दंगे होने लगे और हिन्दुओं तथा आर्यो की मार-पिटाई शुरू हो गई। दंगे के कारण दूसरे दिन गुलबर्गा में चारों ओर भय का वातावरण छा गया। सम्मेलन की समाप्ति पर जब सम्मेलन में आने लोग स्टेशन की ओर जाने लगे तो रास्ते में उन्हें स्थान-स्थान पर पीटने का प्रयत्न किया गया। घुड़सवार पुलिस ने पण्डाल में घुसकर लोगों को कुचलना आरम्भ कर दिया। पुलिस की इस भड़कानेवाली नीति से स्थिति और गम्भीर हो गई थी। किन्तु सम्मेलन के अध्यक्ष राजा नारायणलाल जी पित्ती, पंडित बन्सीलाल जी, शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट, पंडित गंगाराम जी एडवोकेट, श्री कृष्णदत्त जी एम.ए., पंडित रुद्रदेव जी तथा अन्य आर्य समाजी लोगों से साहस से काम लेकर अधिवेशन के दिन आर्यों का धीरज बँधाये रखने का पूरा प्रयत्न किया और रातभर जागकर स्थिति को नियन्त्रण से बाहर नहीं होने दिया। ऐसी विषम परिस्थिति मं भी सम्मेलन दो दिन तक सफलतापूर्वक चला। दूसरे दिन १२-१ बजे श्री शेषरावजी एडवोकेट, श्रीगंगाराम जी, श्री दिम्बरराव जी लाठकर, श्री अमरसिंह जी, श्री शिवकुमार जी, श्री कृष्णादत्त जी, श्री बाबूप्रसाद जी, पंडित रुद्रदेव जी आदि जंगलके रास्ते निकल पड़े। मुसलमान गुण्डे आर्यो की ताक में थे। उन्होंने इन लोगों का पीछा किया और घेर लिया। गुण्डे इनपर आक्रमण करने की योजना बना ही रहे थे कि श्री गंगाराम जी ने अपनी बन्दूक की नली उनकी ओर घुमाई। फिर क्या था! गुण्डे उल्टे पाँव भाग खड़े हुए।

एक अश्वारोही ने तलवार म्यान से निकालकर जब ललकारा तो श्री कृष्णदत्त जी खुली तलवार की परवा किये बिना उसके पास पहुँचे। उन्होंने उसे समझाने का प्रयत्न किया। उस समय यदि घुड़सवार का भरपूर हाथ कृष्णदत्त जी पर चल जाता तो उनका बचना मुश्किल था, किन्तु उनके पीछे ही श्री शेषरावजी और श्री गंगाराम जी अपनी कारबीन और बन्दूक घुड़सवार की ओर ताने खड़े थे। यही कारण है कि वह उनपर तलवार न चला सका। यदि घुड़सवार श्री कृष्णदत्त जी पर तलवार चलाता तो निश्चित ही श्री गंगाराम जी की बन्दूक जी गोली घुड़सवार को बेधकर निकल जाती और श्री शेषरावजी की कारबीन आग उगलकर उसके घोड़े-समेत झुलसाकर रख देती।

श्री कृष्णदत्त जी ज्योंही पीछे हटे, श्री शेषराव जी ने जो जब तक लगभग चुप ही थे, गरजकर कहा, "खुदा की क़सम, जरा तुम पीछे हट जाओ! मैं इन लोगों की बहादुरी को आज़माना चाहता हूँ। एक को भी यहाँ से ज़िन्दा बचकर जाने न दूँगा!" अब परिस्थिति बदल गई। गुण्डों के हौसले पस्त हो गये। एक-एक करके सभी रफ़ूचक्कर होने लगे। इधर आर्यवरों ने भी अपनी योजनानुसार जंगल की राह पकड़ी।

गुलबर्गा में पुलिस के इस क्रूर व्यवहार के विरुद्ध सभी ओर से दुःख प्रकट किया गया तथा निज़ाम सरकार से आग्रह किया गया कि वह अपनी पुलिस के विरुद्ध कार्यवाही करे। इस माँग पर पहले तो कोई ध्यान नहीं दिया गया, किन्तु जब विरोध बढ़ता दिखाई दिया तो सरकार ने चार कान्स्टेबलों तथा एक सब-इन्स्पेक्टर को नौकरी से पृथक् कर दिया। सरकार को स्वीकार करना पड़ा कि गुलबर्गा की लज्जाजनक घटना का सारा भार पुलिस पर है।

आर्य समाजी क्षेत्रों में गुलवर्गा की घटना से शोक व क्रोध की भावना फैली हुई थी। 'आर्य सम्मेलन गुलबर्गा' के अधिवेशन के बाद १९४६ में मुझपर निज़ाम सरकार ने भाषण करने पर एक वर्ष के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया और एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की मनाही भी कर दी गई। निज़ाम सरकार के इस अत्याचार के विरुद्ध 'आर्य प्रतिनिधि सभा' ने एक शक्तिशाली आन्दोलन आरम्भ किया जिसके कारण उसे विवश होकर मुझ पर से ८ मास के बाद प्रतिबन्ध उठा लेना पड़ा। जब मैं हैदराबाद नगर में आया तो जनता ने उत्साहपूर्वक हार्दिक अभिनन्दन करके मुझे कृतज्ञ बना दिया।

गुलबर्गा के दंगे में बुरी तरह घायल होने के कारण बहुत दिनों तक मुझे अस्पताल में चिकित्सा करानी पड़ी। चिकित्सा के कारण सभा का कार्यभार श्री कृष्णदत्त जी ने सँभाला।

१९४४ से १९४६ तक श्री कृष्णदत्त जी (वर्तमान प्राचाय 'हिन्दी आर्ट्स कॉलेज') सभाके मन्त्री रहे और १९४६ से १९४९ तक पंडित गंगाराम जी एडवोकेट 'सभा' के मन्त्री रहे। इस समय बंगाल के सूखे तथा बिहार के पीड़ितों की सहायता के कार्य को आगे बढ़ाया गया और सभा के रचनात्मक कार्यों की प्रगति के लिए काम चलता रहा तथा समाज के संगठन को दृढ़ बनाने की दिशा में ध्यान दिया गया।

१९४९ के समझौते के फलस्वरूप निज़ाम सरकार को चाहिए था कि वह भारत के आर्य समाजी विद्वानों तथा मिशनरियों पर लागू प्रतिबन्ध को उठा लेती, किन्तु वह सभाके निरन्तर ध्यान आकृष्ट कराये जाने पर भी आनाकानी करती रही। जब इस माँग को बार-बार दोहराया गया तो अन्ततः पंडित रामचन्द्र देहलवी, पंडित चन्द्रभानु जी तथा पंडित सतीशचन्द्र जी के आगमन पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया।...

आर्यों का संघर्ष

-पं. नरेन्द्र जी

रियासत हैदराबाद को निज़ाम की नानाशाही और कट्टर साम्प्रदायिक हुकूत के चंगुल से स्वतन्त्र कराने में आर्य समाज का बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। सन् १०३९ ई. के महान् आर्य सत्याग्रह के सामने निज़ाम-सरकार को जिस प्रकार झुकना और लज्जित होना पड़ा था, वह आर्य समाज की तो सफलता थी ही, इससे भी बढ़कर वह निज़ाम राज्य की बहुसंख्यक प्रजा की भी बहुत बड़ी सफलता थी। निज़ाम सरकार की पराजय से हैदराबाद की जनता की चिन्तनधारी बदल गई थी। निज़ामशाही का भय उसके हृदय से मिट गया था। उसके साहस में अद्भुथ वृद्धि हुई थी। इस विषय की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि हैदराबाद के नवयुवक और बाल-वर्ग पर आर्य सत्याग्रह ने अत्यन्त हितकर और क्रान्तिकारी प्रभाव डाला था और अवसर मिलते ही निज़ामशाही का अन्त करने का दृढ़ निश्चय उन्होंने उसी समय कर लिया था। क्रान्ति का जो बीज उस समय बोया गया था, वही समय पाकर एक बड़े वृक्ष के रूप में प्रकट हुआ। कहीं-कहीं क्रान्ति की जो चिनगारी आर्य सत्याग्रह के रूप में चमकी थी, वही अनुकूल परिस्थितियों के आने पर धू-धू करके जल उठी।

अपने जीवन-संघर्ष के प्रत्येक प्रसंग में आर्य समाज ने अपूर्व जीवट, संगठनशक्ति, धैर्य एवं नीतिमत्ता का परिचय दिया है। अपनीसेवा भावना और कर्त्तव्यनिष्ठा के द्वारा आर्य समाज ने हैदराबाद राज्य की जनता का मन मोह लिया और सम्पूर्ण जनता का नेतृत्व सहज में ही प्राप्त कर लिया था। आर्य समाज ने अपने सम्पूर्ण रत्न इस दिशा में किये कि जनता में नव-चेतना और शिक्षा बढ़े एवं अपना वास्तविक स्थान और अधिकार प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प उसमें जागृत हो जाय। कहना न होगा कि हैदराबाद राज्य की प्रजा ने आर्य समाज के नेतृत्व हो जाय। कहना न होगा कि हैदराबाद राज्य की प्रजा ने आर्य समाज के नेतृत्व की सर्वदा ही उत्साह और हर्षपूर्वक स्वीकार किया था। आर्य समाज की बढ़ती हुई सर्वप्रियता और निज़ाम-सरकार की बढ़ती हुई अनीति को देखकर बुद्धिमानों ने बहुत पहले से ही यह भविष्यवाणी करनी आरम्भ कर दी थी कि निज़ाम को नानाशाही जागीरदारी का अन्त शीघ्र होगा और यह आर्य समाज के क्रान्तिकारी आन्दोलन के परिणामस्वरूप ही होगा।

परिस्थितिवश आर्य समाज को धार्मिक और नागरिक स्वतन्त्रताओं की प्राप्ति के लिए आन्दोलन करना पड़ा। आर्य समाज ने सदा ही बलपूर्वक यह अनुरोध किया कि हैदराबाद राज्य के सभी वर्गों के साथ ए ही जैसा व्यवहार किया जाय, लेखन और सम्भाषण की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की जाय, और मुसलमानों का अनुचित पक्षपात तथा हिन्दुओं का अनुचित शोषण न किया जाय। परन्तु निज़ाम-सरकार तो अपनी एक स्थायी और मुस्लिम-पोषक सामप्रदायिक नीति बना चुकी थी और बदनाम होकर तथा खतरे उठाकर भी वह अपनी ही नीति पर चलने का दुराग्रह कर रही थी। आर्यों और हिन्दुओं के विरोध को वह अपने पशुबल द्वारा कुचल डालने का सूर्खतापूर्ण एवं आत्मघाती प्रयत्न कर रही थी। ऐसी स्थिति में न तो कोई निज़ाम-सरकार का समर्थक हो सकता था और न अवश्यम्भावी परिणामों से ही कोई उसे बचा सकता था।

भारत-विभाजन और निज़ाम

सन् १९४६ ई. के अन्त में जब अंग्रेज शासक भारत से विदा होने का निश्चय कर चुके थे और भारत-विभाजन के प्रबन्ध किये जा रहे थें, उस समय निज़ाम-सरकार की छें खिल गई। उसने समझा कि अब उसको अपने चिर-पोषित मतोरथों को पूर्ण करने का अवसर शीघ्र ही प्राप्त होंगा। रियासत हैदराबाद का भारत में अंग्रेजों के रहते हुए पूर्ण स्वच्छन्द होना कठिन हो रहा था, क्योंकि अंग्रेज़ों ने निज़ाम को राजनीति के अनेकविध मायाजाल में जकड़ रखा था। जब १५ अगस्त १९४७ ई. को भारत स्वतन्त्र हुआ, तब भारतीय संघ-राज्य में शामिल होकर निज़ाम को अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देना चाहिए था। यदि ऐसा किया जाता तो अवश्य ही निज़ाम की प्रशंसा होती। परन्तु ऐसा न करके निज़ाम महोदय ने एक नया ही मार्ग अपनाया और वह यह कि उन्होंने अपनी रियासत की पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। निज़ाम का बस चलता तो वह अवश्य ही पाकिस्तान में शामिल होने का निश्चय करता, परन्तु बेचारा विवश था। हैदराबाद राज्य की भौगोलिक स्थिति और हैदराबादियों की बहुसंख्यक जनता उसके मार्ग बाधक थी। तथापि, वह एक नये मार्ग पर चलकर भारत के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न करना चाहता था और यह भी चाहता था कि अपनी भाग्य-परीा करे। अंग्रेज सरकार के मित्र, वफ़ादार और भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के शत्रु नवाब मीर उसमानअली खाँ अब हिज़ मेजेस्टी बनने के मधुर स्वप्न देख रहे थे। इसलिए आत्म-प्रवंचना से वे अपने-आपको बचा नहीं सके और दुस्साहसपूर्वक भारत की नई-नई विदेशी सरकार के प्रतिद्वन्द्वीं वन गये। सच है, कि बुद्धिमान् जहाँ पाँव रखने में भी डरते हैं, सूर्ख वहा निर्भय होकर कूद जाते हैं। हैदराबाद की बदनाम सामप्रदायिक संस्था। मजलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन' इसके हिन्दू-विद्वेषी नेताओं और रज़ाकारों पर निज़ाम की बहुत अधिक भरोसा था। वे समझने लगे थे कि रज़ाकारों की सहायता से हैदराबाद की १५ प्रतिशत जनता के विरोधी होने पर भी वे अपने स्वतन्त्र हैदराबाद राज्य को सुरक्षित रख सकेंगे और भारत सरकार भी उनका कुछ न बिगाड़ सकेगी।

निज़ाम महोदय की योजनाएँ केवल हैदराबाद को अपना स्वतन्त्र राज्य बनाने तक ही सीमित न थीं, वे तो। 'बृहद् हैदराबाद राज्य' बनाने के आयोजन कर रहे थे और मछलीपट्टणम आन्ध्र प्रदेश तथा बराड़ प्रान्तों के कुछ भाग पर भी उनकी नापाक नज़रें लगी हुई थीं। उधर पुर्तगाल के सालाज़ार से गोआ का सौदा भी किया जा रहा था। गुप्तरूप में संयुक्तराष्ट्रसंघ की सदस्यता पप्त करने के षड्यन्त्र भी चालू थे। अपनी पुरानी सेवाओं के बदले वर्तानिया और अमेरिका से सहायता मिलने की उनको पूर्ण आशा थी। कुछ लोगों ने उनको इस विषय में बड़े-बड़े सब्जबाग़ दिखा रखे थे।

यहाँ इस बात का उलॅलेख करना आवश्य न होगा कि उस्मानअली खाँ के पूर्वजों के प्रथम सूबेदार आसफ़जाह निज़ामुल्मुल्क को दिल्ली के बादशाह ने दक्कन का सूबेदार बनाकर भेजा था। परन्तु आसफ़जाह ने केन्द्रीय सरकार के साथ ऐसा ही विद्रोह किया जैसाकि भारत सरकार के विरुद्ध उसमानअली खाँ ने किया।

कहा जाता है कि दिल्ली के बादशाह फर्रुख़सियर ने १७२३ ई. में मीर कमरुद्दीन को अपना सूबेदार बनाकर दक्कन बेजा, जिसे आसफ़जाह निज़ासुल्मुल्क का खिताब दिया गया था। १७२४ ई. में आसफ़जाह ने केन्द्रीय सरकार से गद्दारी करके अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और १७४८ ई. तक शासन करते रहे। १८५३ ई. में निज़ाम ने बरार, उसमानाबाद और रायचूर कम्पनी को इस उद्देश्य से समर्पित किया था कि हैदराबाद में कम्पनी की फ़ौज रहे और कम्पनी का व्यय भी इन्हीं का आय से चले। १८५७ ई. के स्वतन्त्रता-संग्राम में अंग्रेजों ने पूरे सहयोग के उपलक्ष्य में निज़ाम को रायचूर और उसमानाबाद लौटा दिये। निज़ाम ने जिस बरार को २५ लाख रूपये वार्षिक के निश्चित चट्टे पर अंग्रेज सरकार को दे दिया था वह आज महाराष्ट्र प्रदेश का भाग है। इसी परम्परा के अनुसार निज़ाम ने भी अपने राज्य को स्वतन्त्रता रखने का स्वप्न लिया था।

'मजलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन' के इरादे चंगेज़ के

निज़ाम और उनकी सामप्रदायिक सरकार ही उन सम्पूर्ण कष्टों और अत्याचारों के लिए उत्रदायी थी, जिनका सामना हैदराबाद की जनता को करना पड़ा था।। मजलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन' अब नाज़ी हिटलरशाही के रूप में भली प्रकार जनता के सामने आ चुकी थी। उस कठिन अवसर पर, जबकि निज़ाम ने भारत संघ से छेड़छाड़ मोल ली थी, हैदराबाद के शांतिप्रिय और बुद्धिमान् मुसलमान 'मजिलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन' तथा निज़ाम-सरकार को बहुत अधिक भय और सन्देह के साथ देखने लगे थे। जब कुछ देशभक्त और न्यायप्रिय सज्जनों ने निज़ाम सरकार को उसकी अनुचित हलचलों के दुष्परिणामों से सूचित करना चाहा था, तब उन्हें कायर और गद्दार की उपाधि से निभूषित करके बदनाम किया गया। रियासत के नये मन्त्रिमण्डल में चार-पाँच मजलिसी मुसलमान अधिकार जमा चुके थे, और 'मजलिस' का नेता कासिम रिज़वी रज़ाकारों का फ़ील्ड-मार्शल बनकर भारत संघ से टक्कर लेने की योजनाएँ बना रहा था। हैदराबाद की तथाकथित स्वतन्त्रता को किसी भी मूल्य पर सुरक्षित रखने के लिए, उस समय यहा जो-जो भयंकर कुचक रचे जा रहे थे, वे भले ही सर्वथा अनावश्यक और हास्यास्पद थे, तथापि निज़ामशाही को आत्मघात करने से कौन रोक सकता था ?

रज़ाकारों की भर्ती

रियासत हैदराबाद में दीर्घकाल से आर्य हिन्दुओं पर पुलिस के अत्याचार होते चले आ रहे थे, परन्तु जब निज़ाम और मजलिसी नेताओं ने मिलकर हैदराबाद की तथाकथित स्वतन्त्रता की घोषणा की, तब परिस्थिति और भी अधिक विषम बन गई। सरकार ने जहाँ अपनी फ़ौज और पुलिस को अधिक-से-अधिक शक्तिशाली बनाने का यत्न किया, वहाँ रज़ाकारों ने भी लगभग तीन लाख रज़ाकार निज़ाम की सहायता के लिए भर्ती कर लिये। रियासत के सभी महत्वपूर्ण केन्द्रों में फ़ौज और पुलिस का जाल बिछा दिया गया, और उन्हें इस बात तक आदेश दे दिया कि जो कोई भी सरकार और उसकी नीति का विरोधी नज़र आये, उसे गोली मार दी जाए। इस प्रकार उन दिनों सम्पूर्ण हैदराबाद राज्य में पुलिस और फ़ौज का राज्य हो चुका था और जनता में भारी आतंक छाया हुआ था।

आर्य समा के लिए सन् १९४७ ई. का समय भारी कठिनाई और परीक्षा का समय था, ततापि यह भीस्पष्ट था कि वह परीक्षा अन्तिम थी और कठिनाइयों का अन्त भी समीप ही था। परिस्थितियाँ प्रतिकूल और वहुत भयानक थीं। आये-दिन नई-नई दुर्गटनाओं की भरमार होने लगी थी। प्रत्येक क्षण अनिश्चितता में चिन्ता करते हुए व्यतीत हो रहा था। निज़ाम सरकार तानाशाही हथकण्डों और पशु-बल के आधार पर देशभक्त शान्ति और स्वतन्त्रताप्रिय, प्रजातन्त्रवादी और सम्प्रदायवाद विरोधी शक्तियों को कुचल डालना चाहती थी। पुलिस और फ़ौज के साथ रज़ाकार कर डालने का घृणित आयोजन कर रहे थे। इस अवसर पर आर्य समाज ने भी अपनी परम्परागत सत्यप्रियता, निडरता, साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया। जनता से आर्य समाज के निकट सम्पर्क एवं आर्य समाज के प्रति जनता के प्रबल प्रेम और विश्वासका परिचय भी उस अवसर पर मिला। जनता के इस पूर्ण सहयोग और समर्थन को पाकर आर्य समाज भी युद्धक्षेत्र में कूद पड़ा और उसने भी। तथाकथित आज़ाद हैदराबाद सरकार'के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, क्योंकि यह योजना हिन्दू जनता के हितों के विरुद्ध थी और इनके ऊपर निज़ाम की अत्याचार-परायण निरंकुश तानाशाही नीति को लादनेवाली थी। इसलिए हैदराबाद की सम्पूर्ण जनता उसके विरुद्ध आर्य समाज के साथ उठ खड़ी हुई थी। आर्य समाज का पक्ष उस युद्ध में यह था कि हैदराबाद राज्य भारत-संघ का एक अविभाज्य अग है और भारत-संघ में शामिल होने में ही हैदराबाद की जनता का हित है, भारत-संघ में शामिल होकर ही हैदराबाद की जनता प्रजातन्त्रवाद के लाभों कोप्राप्त कर सकता है और विश्व-चेतना से अपना उचित और आवश्यक सम्बन्ध स्थापित कर सकती है, इसलिए हैदराबाद की जनता को वे सब बलिदान करने ही चाहिए, जिनकी उस समय आवश्यकता थी। ...

స్వామి అగ్నివేశ్ గారిని స్మరించుకుందాం

ప్రముఖ క్రాంతికారి సన్యాసి, ఆర్య సమాజ నాయకుడు సార్వదేశ్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షుడు, ప్రముఖ సంస్కరణవాది స్వామి అగ్నివేశ్ గారు శుక్రవారము తేది 11-9-2020 రోజున స్వర్గస్థులైనారు. వారి స్మృతి సభ **27-9-2020** పండిత నరేంద్ర భవన్ రాజ్‌మొహళ్ళ కాచిగూడ యందు నిర్వహించ నిర్ణయం అయినది.

యజ్ఞము : సా॥ 4-00 గం॥లకు మరియు **సభ :** సా॥ 5-00 గం॥ల నుండి

ఇందులో **రాష్ట్ర మానవ హక్కుల కమీషన్ చైర్మెన్ జస్టిస్ జి. చంద్రయ్య గారు** న్యాయకోవిదులు, మేధావులు, విద్యావంతులు, ఆర్య సమాజ బంధువులు, ఆర్య నాయకులు, మిత్రులు, విభిన్న సంఘాల ప్రతినిధులు పాల్గొంటారు.

తామందరు కోవిడ్ నియమాలను పాటిస్తు శ్రాద్ధాంజలి సభలో పాల్గొని శ్రద్ధాంజలి ఘటించ ప్రార్థన.

ఇట్లు

మీ వెంకట్ రఘురాములు, ప్రధాన కార్యదర్శి

निजाम पर बम

-नारायण राव पवार

निज़ाम रियासत की समस्या का हल निकालने का नाजुक समय आ चुका था । अतः कुछ देशभक्त नवयुवकों के श्रम व त्याग का ही परिणाम थी निज़ाम पर बम फेकने की घटना । निज़ाम का अंत करने के षडयंत्र में शरीक थे-सर्वश्री बालकिशन, मैं (नारायण राव पवार) पंडित विश्नाथ, गंगाराम, जगदीश, रेड्डी पोचनाथम् व जी. नारायण स्वामी । हम सभी युवक आर्य समाज के कार्यकर्ता थे ।

धर्माबाद स्टेशन पर श्री गोविंदराव पांसरे के हत्यारो को खत्म किया जाय या वरंगल में श्री मोगलय्या तथा डॉक्टर नारायण रेड्डी के क़ातिलों का अंत किया जाए, या इन दोनों को छोड पाकिस्तान की स्थापना के लिए बडे पैमाने पर प्रचार करने वाले तया निज़ाम के राजनैतिक सलाहाकर, बुद्धिजीवी, मेधावी डॉ. सैयद अब्दुल लतीफ का अंत किया जाए । इसके चयन हेतु हम लोग सुदीर्घ चर्चा करते थे ।

उन दिनों मै रोज शाम मे ५ बजे हैदराबाद हाईकोर्ट में लॉक्लास में पढने जाता था । जो रात ९ बजे तक चलती थी । एक दिन मेरे मित्र श्री बालकिशन जी जिनके घर में एक अलग कमरे में रहते थे, उन्होंने मुझे पूछा कि क्या वो मेरे साथ लॉक्लास में लेक्चर सुनने आ सकते है ? मैने उनसे कहा की ''हमारे क्लास में ६०० से अधिक विद्यार्थी है और आप भी मेरे क्लास में बैठकर लेक्चर सुन सकते है'' । तब श्री बालकिशन जी उस एक दिन के लिए मेरे साथ हॉईकोर्ट जाने निकले जहाँ लॉ क्लास होता था ।

जैसे ही हम दोनो नयेपुल के फुट पाथ पर से हॉईकोर्ट की तरफ जा रहे थे सिटियाँ बजने लगी । क्योंकि हैदराबाद के शासक निज़ाम की सवारी मक्का मसज़ीद की ओर जा रही थी । सिटियाँ बजने के एक दो मिनट बाद निजाम की सवारी नये पुल पर से गुज़रने लगी ।

वह देखकर मेरे मित्र बालकिशनजी ने कहा ''देखो निज़ाम जा रहा है'' तब मैने कहा ''यह निज़ाम तो भारत देश का सबसे बडा गद्दार है और उसे तो खत्म कर देना चाहिए ।''

यह सुनकर बालकिशन जी चुप रहे । हम दोनों लॉ क्लास खत्म करके घर लौटे और रोज़ की तरह हमारी रात में चर्चा शुरू हुई । तब बालकिशन जी ने मुझसे कहा-

''देखो नारायण राव आज शाम मे लॉ क्लास जाते समय नये पुलपर आपने जो बात निज़ाम को खत्म करने की कही उसे पूरा करना है ।''

तब मैने कहा की ''यह प्रस्ताव हम अपने क्रांतीदल के सामने रखेंगे ।''

हमारे क्रांति दलकी मीटिंग श्री बालकिशन जी के घर में मेरे कमरे पर हुआ करती थी । कभी कभी श्री बालकिशन जी के स्पेशल बॉम्बे

Narayan Rao Pawar

टेलर सिलाई की दुकान पर भी होती थी । जो सिद्जीअंबर बाज़ार, हैदराबाद में थी ।

मेरे और बालकिशन के चिारानुसार निज़ाम पर बम डालने का प्रस्ताव मैने हमारे क्रान्ति दल के सामने रखा । दीर्घ चर्चा के बाद मेरा प्रस्ताव क्रान्तिदल ने मान लिया । और इस कार्य को पुरा करने का काम दल ने मुझे सौंपा ।

कुछ दिनों के बाद-

श्री देवय्याजी जो एक आर्य समाजी कार्यकर्ता और पं. नरेन्द्रजी के शिष्य थे । उनकी एक रेडीमेट कपडों की दूकान सुल्तान बाजार में थी । उन्होंने हैदराबाद की समस्या पर विचार करने के लिए कुछ क्रान्तिकारीयों को अपनी दूकान पर रात के ९ बजे दूकान बंद करने के बाद बुलाया था । उसमें १०-१२ क्रान्तिकारी विचार के लोग उपस्थित थे । सभी अपना अपना विचार प्रस्तुत कर रहे थे । उनमें श्री भीष्मदेवजी एक आर्य समाजी क्रान्तिकारी युवक ने कहा कि ''निज़ाम के शासन के विरूद्ध उसके पुलीस चौकियों पर, सरकारी पोस्ट ऑफीसों पर हमला करेंगे'' । तब मैने कहा ''इस कार्य को पूरा करनेके लिए आपके पास कितना पैसा है''

तब उन्होंने कहा ''पैसा तो अभी जमा करना है'' तब मैने निज़ाम को खत्म करनेका विचार उनके सामने रखा और उनसे मैने ये भी कहा की इस काम में कम से कम हथियार और कम से कम आदमी लगेंगे और हैदराबाद की समस्या को हल करने के लिए उसका परिणाम अधिक से अधिक होगा । थोडी देर बाद वह बैठक समाप्त हुई ।

मीटिंग से बाहर जाते समय श्री रेड्डी पोचनाथम् जो उस बैठक में उपस्थित थे उन्होंने मुझसे कहा ''निज़ाम को खत्म करने के तुम्हारे विचार पर मै रात भर सोचुंगा, यदि मुझे ठीक लगे तो मै कल सबेरे ९ बजे तक एक हैण्ड ग्रेनेड बम जो पं. नरेन्द्र जी ने आर्य समाज के रक्षणार्थ दिया है, वह बम मै तुम्हे लाकर दूंगा और यदि मै न आऊं तो समझलो की मै आपके विचारों से सहमत नही हूँ'' ।

उनके कथनानुसार श्री रेड्डी पोचनाथम् दुसरे दिन सबेरे ठीक ९ बजे मेरे कमरे पर आये और उन्होंने एक हैण्ड ग्रेनेड बम मुझे दे दिया ।

त्यागी, अमरजीवी नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में भारत वासियों को संबोधित करते हुए कहा था **''तुम मुझे खून दो मै तुम्हे आज़ादी दूंगा'' । नेताजी के इस वाक्य ने दल को प्रभावित ही नही, बल्कि उत्तेजित भी किया । जिससे देश द्रोही निज़ाम की हत्या करने का निर्णय और भी पक्का हुआ ।** इस निर्णय पर आने की प्रेरणा के और भी कारण निम्नलिखित है ।

निज़ाम पर बम डालने की प्रेरणाएँ निज़ाम का अंत करने के लिए उसपर बम फेंकना मृत्यु को अव्हान देना था ।

यह कार्य करने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई ।

-शेष पृ. १७ पर

देश-विदेश के महापुरुषों द्वारा

-प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विदेशी विद्वानों की दृष्टि में !

विश्व हितैषी

यूरोप के प्रसिद्ध विद्वान्, संस्कृत साहित्य प्रेमी और कई ग्रन्थों के रचयिता प्रो. एफ. मैक्समूलर-

"आर्य समाज के आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है। स्वामी दयानन्द ने विश्व-हित के लिये कार्य किया है। आर्य समाज के अनुयाइयों को शान्त नहीं बैठना चाहिए। किन्तु स्वामी जी के उपदेशों को सफल बनाने के लिये प्रतिदिन अग्रसर रहना चाहिए। यदि मुझे आर्य समाज की सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त होगा तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूंगा।

.....स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया और जहां तक समाज सुधार का सम्बन्धहै, वह बड़े उदार हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।

जन-जागृति के जन्मदाता

प्रसिद्ध तत्ववेत्ता एवं महान् फ्रेंच लेखक, सन्त रोमा रोलां-

'ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्घर्ष शक्ति अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिया है।"

ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष सिंह उन में से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है, जबकि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिये बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता के अन्याय का प्रबल विरोध किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से थे।

निराकार पूजा और एकेश्वरवाद के प्रचारक

महर्षि की समकालीन, थियोसॉफिकल सोसाइटी की संस्थापिका सुधारवादी, मैडम ब्लावटस्की।

"मूर्ति पूजा, बाल विवाह और मिथ्या विश्वासों के विरुद्ध गर्जन करते हुए स्वामी दयानन्द ने कोने-कोने का परिभ्रमण किया। भारत के पतन और उसकी राजनैतिक दास्ता के लिये वह ब्राह्मणों को उत्तरदायी ठहराते थे। उनकी दृष्टि में भारत के दुर्गुणों का मुख्य कारण वेदों का अशुद्ध भाष्य है। स्वामी जी का संस्कृत का ज्ञान अगाध था, जिसके बल पर वह वेदों की एकेश्वरवाद विषयक शंकाओं का निवारण करके न केवल जनसामान्य का ही अपितु विद्वानों का भी हित करते थे। वह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ, गम्भीर अध्यात्मवेत्ता, आश्चर्य जनक वक्ता और बुराई पर निर्भीक प्रहारक भारत को प्राप्त नहीं हुआ।"

स्वामी जी जहाँ जाते जनसंमूह उनके चरणों की धूल में लोटने को उद्यत रहता, परन्तु वह उन्हें किसी नए धर्म का उपदेश नहीं देते और न नए-नए मिथ्या विश्वासों की ही सृजना करते हैं। वह उन्हें विस्मृत संस्कृत अध्ययन को अपनाने और अपने पूर्व पुरुषों के सिद्धान्तों विश्वासों की जगह तर्क, पाप के स्थान पर पुण्य, अविद्या की जगह विज्ञान, द्वेष के स्थान पर मित्रता, वैर की जगह समता, नरक के स्थान पर स्वर्ग, दुःख के स्थान पर सुख, भूत प्रेतों के स्थान पर परमेश्वर और प्रकृति का राज्य हो जाएगा। मैं इस अग्नि को मांगलिक समझता हूँ। जब यह अग्नि सुन्दर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वजनिक सुख, अभ्युदय और आनन्द का युग आरम्भ होगा।

यह आग एक भट्टी में थी जिसे आर्य समाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द के हृदय में प्रज्ज्वलित हुई थी।

प्रचण्ड ब्रह्मबल की मूर्ति

मानवता के पुजारी, महान् तत्त्वज्ञ दीनबन्धु श्री एन्ड्रूज ने महर्षि जी को विलक्षण प्रतिभाशाली बताते हुए कहा था-

मैंने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व पर जितना अधिक विचार किया तथा अध्ययन किया, उतना ही मुझे अधिक विश्वास होता गया कि उनके महान् प्रभाव का रहस्य उनकी कार्य पद्धति में देखने को मिलता है, जिससे वे अपनी मातृभूमि की आत्मा अथवा प्राचीन भारत के आदर्श को संगठित करके उसका प्रचार चाहते थे। उस समय लोग हताश होकर अपनी प्राचीन भक्ति भावना तथा प्राचीन मर्यादा को तिलांजलि दे रहे थे। देश में अनेक मनुष्य आये और कहते गये कि सुधार तथा संशोधन की पहली आवश्यकता है, परन्तु उनमें शक्ति का अभाव था। उस समय स्वामी दयानन्द अपने विलक्षण प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और प्रचण्ड ब्रह्मबल के साथ कार्य क्षेत्र में कूद पड़े।

वैज्ञानिक युग में लाने वाले

पश्चिम के प्रसिद्ध विद्वान् श्री एमर्सन-

"बड़े होने के साथ एक शर्त है-गलत समझा जाना। हर महापुरुष की यही नियति रही-स्वामी दयानन्द की विशेष रूप से, क्योंकि उन्होंने अनेक बाधाओं से जूझते हुए गहन अन्धकार से होकर मार्ग बनाया था। इसलिए उनमें सन्तों की नम्रता और निरहंकारिता नहीं दिखती देती, परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत के सांस्कृतिक व राष्ट्र नव-जागरण में उनका स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनकी मान्यताओं और सिद्धान्तों ने एक बार तो हीनभावग्रस्त इस जाति को अपूर्व उत्साह से भर दिया, और अन्धविश्वास तथा कुरीतियों के जाल से मुक्त होकर उसने गतिमय प्रगति के मार्ग को अपनाया था। वही आज उसे वैज्ञानिक युग में ले आया है।"

आर्य समाज सर्वोत्कृष्ट समाज

विदेशी विद्वान् सर एडवर्ड डगलस मेलेगकन ने भारत भ्रमण करके अपने अनुभवों में आर्य समाज को शुद्ध धार्मिक

समाज बताते हुए लिखा था-

"पंजाब में जितनी समाजें हैं, उनमें आर्य समाज सर्वोत्कृष्ट है। इस संस्था के संस्थापक स्वामी दयानन्द काठियावाड़ के ब्राह्मण थे। आर्य समाज का सामाजिक कार्यक्रम स्वतन्त्र और लोकप्रिय है। आर्य समाज राजनैतिक सभा या सोसाइटी नहीं, परन्तु एक धार्मिक समाज है। आर्य समाज बाल-विवाह की विरोधी, विधवा विवाह की सहायक और स्त्री शिक्षण की प्रचारक है। यह अनाथालय, पाठशालाएं, चिकित्सालय और अनेक लाभदायक संस्थाएं स्थापित करती है। आर्य समाज का संगठन बहुत ही उत्तम है।

नवीन शुद्ध हिन्दू धर्म के जन्मदाता

सुधारवादी, लेखक, पश्चिम को अन्धविश्वासी मान्यताओं से छुड़ाने वाले श्री एस.एल. माइकेल-

"मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती को सदैव गत शताब्दी के उन महापुरुषों में से एक समझता रहा हूँ जिन्होंने परमहंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द जैसे महान् पुरुषों की तरह नवीन हिन्दू धर्म की गहरी और दृढ़ नींव डाली है और इसको पौराणिक भ्रंतियों से शुद्ध कर दिया है।"

एक फरिश्ता

महर्षि के समकालीन थियोसॉफिकल सोसाइटी के प्रधान, प्रसिद्ध पाश्चात्य सुधारक कर्नल अलकाट ने महर्षि की मृत्यु पर निम्न सन्देश दिया था-

"उनकी मृत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रों में से एक को खो दिया। हमारा स्वामी जी से पत्रव्यवहार होता था। सचमुच वे एक आला इन्सान ही नहीं फरिश्ते थे।"

मर कर भी अमर

फ्रेंच के प्रसिद्ध लेखक एवं विचारक श्री पाल रिचर्ड-

"स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गये ईट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारा मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है-आर्यावर्त, उठ जाग, समय जा गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।"

जाति भेद नाशक

प्रसिद्ध जर्मन साहित्यकार, वेदानुरागी, प्रोफेसर डॉ. विण्टरनीज-

"हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नही है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्य समाज के प्रवर्तक अपनी जाति की मूर्खता और उसकी होनियों के विरुद्ध अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त यदि कुछ और न भी करते तो भी वह वर्तमान भारत के वड़े नेता के रूप में अवश्य सम्मान पाते।"

एकेश्वरवादी

यूरोपीय विद्वान् श्री मोनियर विलियम्स-

"स्वामी दयानन्द एकेश्ववादी, वेद पर अपने सिद्धान्तों को मानने वाले, प्रगति समर्थक तथा देशोद्धारक थे।"

वेदानुयायी

ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री रेमजे मैकडानलड-

आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसी जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है।"

मूर्तिपूजा के विरोधी

यूरोप के सुधारवादी विद्वान् नेता सर वेलण्टाइन शिरोल-

स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त उनके **'सत्यार्थ प्रकाश'** ग्रन्थ में निहित है। यही सिद्धान्त वेदभाष्य-भूमिका में हैं। स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा से अविराम युद्ध किया।

स्वराज्य आन्दोलन के जन्मदाता

पाश्चात्य विद्वान् श्री ग्रास ब्रॉब्ड-

"वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन के कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माणकताओं में स्वीकार करनी ही चाहिए। स्वामी दयानन्द एक महान् तथा पुण्यशाली व्यक्ति थे। वे भारतवर्ष के कीर्तिस्तम्भ थे यह सवको स्वीकार करना पड़ेगा। उनको खोकर भारत की महान् शोचनीय क्षति हुई है।"

जगद्गुरु

लण्डन के महान शिक्षा शास्त्री, श्री फॉक्स पिट्-

"मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत् गुरु और सुधारक थे।"

भारत के सर्वोत्तम महापुरुष

श्री जी.एस. अरुण्डेल के विचार-

महर्षि दयानन्द ने भारत और संसार मात्र की जो सेवा की है, उसे मैं भली-भांति जानता हूं। वह भारतवर्ष के सर्वोत्तम महापुरुषों में से थे। स्वामी जी ने मातृभूमि की सब से बड़ीसेवा यह की है कि उस में जातीय शिक्षाका विचार पैदा कर दिया है। जातीय शिक्षा क्या है ? यही कि हमारी शिक्षा पद्धति हमारी जातीय आवश्यकताओं के अनुसार हो और उसमें प्रत्येक विद्यार्थी को उसके धर्मानुसार धार्मिक शिक्षण दिया जाए।"

राष्ट्र गौरव

कांग्रेस के संस्थापक श्री ए.ओ. ह्यूम-

"स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के विषय में कोई मनुष्य कैसी ही राय कायम कर ले परन्तु यह सब को मानना पड़ेगा कि स्वामी दयानन्द अपने देश के लिए गौरव रूप थे। दयानन्द को खोकर भारत ने बहुत खोया है। वह एक विराट् और श्रेष्ठ पुरुष थे।

परम सत्य-भक्त

पाश्चात्य विद्वान्, विचारक एवं लेखक श्री एस.एस. पोलक-

"स्वामी दयानन्द एक महान् आत्मा और निर्भय पुरुष थे। वे अपने धार्मिक विश्वासों पर अटल रहे, इसलिए नहीं कि वह अपने विचारों के पक्षपाती थे, अपितु इसलिए कि वह सत्य के परम भक्त थे। इसीलिए भारतवासी तथा अन्य देशों वाले उन पर अटूट श्रद्धा रखते हैं।"

स्वराज्य प्राप्ति के इच्छुक

विदेशी विद्वान् न्यायमूर्ति जस्टिस पी. हेरीसन-

"वहुत से धार्मिक तथा सदाचार सम्बन्धी कारणों से हिन्दू जाति परतन्त्र वनी, उस पर ऋषि दयानन्द ने खेद व्यक्त किया था। दयानन्द के प्रचार का मुझे एक उद्देश्य दिखाई देता है कि देश को स्वराज्य प्राप्त हो।"

मानवता के नेता

श्री एस.डी. स्टोक्स-

"निःशंक स्वामी दयानन्द जी एक महापुरुष संस्कृत के प्रगाढ़ पण्डित, उत्कृष्ट साहसी और स्वावलम्बी तथा मानवता के नेता थे।

प्राचीन साहित्य में प्रेम पैदा करने वाले अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर श्री डब्ल्यू. अनैस्ट हार्किंग-

"प्राचीन साहित्य एवं प्रथाओं को बनाये

रखते हुए भारतीय युवक की रुचि का वर्त्तमान सभ्यता के गुणों के साथ सम्पर्क स्थापित रखना वर्त्तमान् महान परिवर्तन की कठिन परिस्थिति में एक महान कार्य है । इसलिए इसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के हम अति कृतज्ञ है ।''

सत्य के महान् पुजारी
पाश्चात्य विद्वान्
श्री रेवरन्ड टी.डी. सले-

''स्वामी दयानन्द ने जिसको सत्य माना, उसको स्वतन्त्रता से स्वीकार किया । जिस को निकृष्ट और मिथ्या माना, उसको लोगों के सामने निडरतापूर्वक पेश किया ।''

राष्ट्रोद्धारक
ईसन के भूतपूर्व न्याय-मन्त्री
श्री रहीमजादा सफावी-

''स्वामी दयानन्द की हिन्दू धर्म तथा नैतिक और सामाजिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र के उद्धार के लिए की गई सेवाएं महान् हैं । उनका वर्णन नहीं किया जा सकता । इससे उनके पुरुषार्थ के लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ ।''

महान् पुरुष
जापान के प्रसिद्ध प्रचारक
श्री वैरन हयाशी-

''भारत ने स्वामी दयानन्द के रूप में एक महान् पुरुष को जन्म दिया ।'

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थानकर्त्ता
श्रीलंका के सुप्रसिद्ध नेता
श्री एस. प्राण बिता-

''भारतीय संस्कृति का जो पुनरुत्थान हम देख रहे हैं उसका अधिकांश श्रेय स्वामी दयानन्द सरस्वती को ही है ।''

हिन्दू जाति के रक्षक
नेपाली नेता श्री नरेन्द्र शमशेरजङ्ग बहादुर राणा-

''जिस समय लोग अपने धर्म को छोड़कर इधर-उधर विधर्मी होते चले जा रहे थे उस समय ऐसा लगता था कि अब हिन्दू धर्म का नाम लेवा मिलना कठिन होगा । उस समय अपने नियामानुसार परमपिता परमात्मा ने धर्म व जाति की रक्षा के लिए अपने परम भक्त और प्यारे पुत्र बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को भेजा, जिन्होंने हिन्दू जाति को तो विधर्मी होने से बचाया ही, किन्तु भूल से जो अहिन्दु हुए थे उनको वापस लेने का भी मार्ग दिखाया । इसी से आज हिन्दू जाति का नाम मौजूद है हमें इसके लिए स्वामी जी महाराज को धन्यवाद देना चाहिए । विद्या और शिक्षा के बारे में जो काम स्वामी जी ने किया है, वह अनुकरणीय है ।''

आत्म सम्मान बढ़ाने वाले
नार्वे के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री व
प्राच्यविद्या विशारद
श्री स्टेन कोनो, पी.एच.डी.

''हम वैदिक आर्यो की सन्तान हैं-राष्ट्रीय आत्म सम्मान को दृढ़ करने वाला यह विश्वास हमें स्वामी दयानन्द सरस्वती की कृपा से प्राप्त हुआ है ।''

...पृ. १४ का शेष

१) आर्य समाज में रहकर उस के कार्य कलापों को करते रहने से अपने देश तथा संस्कृति के प्रति अपार श्रद्धा भक्ति उत्पन्न हुई ।

२) हैदराबाद के लौह पुरुष पंडित नरेन्द्रजी जोश भरे व्याख्यान वरंगल में और अन्य स्थलों पर दिया करते थे । उन व्यख्यानों को सुनना ।

३) गुरूकुल घटकेश्वर की स्थापना पिताजी बंसीलाल व्यासने की थी । उसमें संस्कृत के महान पंडित व अध्यापक ऋभुदेव शर्मा ने एक कविता लिखी थी, जिसे आर्य समाज की साप्ताहीक पत्रिका **''आर्य भानु''** के संपादक पंडित कृष्णदत्त ने प्रकाशित की थी । वहकविता इस प्रकार थी-

है आर्य वीर रणधीर तुम्हारा स्वागत ।
हे धीर वीर गंभीर तुम्हारा स्वागत ।
बम बरसे या गोलों की लगी झडी हो ।
सिर देना, रखना मान तुम्हारा स्वागत ।
हे धीर वीर गंभीर तुम्हारा स्वागत ॥

इस कविता ने मुझपर जादु सा असर किया और मै आखरी सांस तक निज़ाम शाही को मिटाने का प्रयत्न करने के लिए कटीबद्ध हो गया ।

४) कुंवर जोरावर सिंह, (सिंह कवि) ने पाकिस्तान पच्चीसी की कविता लिखी थी जिसका शीर्षक था **''शमशान भले ही बन जाय, बन सकता पाकिस्तान नहीं''** इस कविताने भी मुझ पर असर डाला ।

५) निज़ाम की पुलीस तथा निज़ाम राज्य के अन्दर रजाकारों का हिन्दुओं पर होने वाला ज़ुल्म ।

मृत्यु का सामना : वीरसंगना का पराक्रम : दम्पति बलिदानी

-पं. नरेन्द्र जी

हैदराबाद में रज़ाकारी गतिविधियाँ जब शिखर पर थीं, उस समय की घटना है कि ज़िला उस्मानाबाद के कलक्टर मिस्टर हैदरी ने दो पठान और एक मुस्लिम पुलिस जवान को लेकर ५ मई सन् १९४८ को श्री किशनराव टेके तहसल भूम स्थान ईट के घर पर पहुँचकर किशनराव जी से कहा कि ''तुम्हारे घर के आँगन में 'ओ३म्' का झण्डा लहरा रहा है, उसे तुरन्त निकाल दो, अन्यथा तुम्हें गोली से उड़ा दिया जाएगा !'' श्री किशनराव जी ने शोधपूर्ण ध्वनि मे बड़ी दृढ़ता के साथ कहा कि ''मैं प्रत्येक रूप में मृत्यु का आलिंगन कर सकता हूँपरन्तु 'ओ३म्' के झण्डे को कदापि अपने घर से उतारूँगा नहीं ।'' ज्योंही श्री किशनराव जी के मुख से ये शब्द निकले कि मिस्टर हैदरी ने पिस्तौल से गोली चलाकर श्री किशनराव जी को मृत्यु के घाट उतार दिया । जैसे ही गोली से धड़ाके की ध्वनि श्री किशनराव जी की धर्मपत्नी श्रीमती गोदावरी जी के कानों में पड़ी, उन्होंने घर में लटकी की हुई बन्दूक उठाई और विद्युत् की भाँति घटनास्थल पर पहुँची । दो पठानों और एक पुलिस जवान को गोली का निशाना बनाकर उन्हें वहीं का वहीं ढेर कर दिया । दूसरे कक्ष में एक ओर हैदरी अत्याचारी खड़ा था । उसने वीरांगना श्रीमती गोदावरीबाई को पिस्तौल की गोली चलाकर समाप्त कर दिया और उनके सारे घर को आग लगा दी ।

श्री किशनराव टेके और उनकी धर्मपत्नी गोदावरी ने अपने प्राणों की आहुति देकर भी आर्य-धर्म के पवित्र 'ओ३म्' की पताका को झुकने न दिया । यह थी उन धर्मपरायण पति-पत्नी की अदम्य वीरता की कहानी !

స్వామి అగ్నివేశ్ ఇకలేరు

- ఢిల్లీలో కన్నుమూసిన సామాజిక ఉద్యమ నేత
- కాలేయ వ్యాధితో కొద్దిరోజులుగా చికిత్స
- తెలంగాణ ఉద్యమానికి తొలినుంచీ మద్దతు
- ముఖ్యమంత్రి కేసీఆర్ సంతాపం

న్యూఢిల్లీ, సెప్టెంబర్ 11: ప్రముఖ సామాజిక ఉద్యమకారుడు, ఆర్యసమాజ్ నాయకుడు స్వామి అగ్నివేశ్ (80) శుక్రవారం కన్నుమూశారు. కొద్దిరోజులుగా కాలేయ సంబంధ అనారోగ్యంతో ఢిల్లీలోని ఇన్‌స్టిట్యూట్ ఆఫ్ లివర్ అండ్ బిలియరీ సైన్సెస్‌లో చికిత్స పొందుతున్న ఆయనకు శుక్రవారం సాయంత్రం గుండెపోటు రావడంతో తుదిశ్వాస విడిచారు. దేశం నలుమూలలా జరిగిన అన్ని రకాల ప్రజా ఉద్యమాలకు వెన్నుదన్నుగా నిలిచిన స్వామి అగ్నివేశ్.. వెట్టిచాకిరి, మహిళా సమస్యలపై ప్రత్యేకంగా సుదీర్ఘ పోరాటం చేశారు. తెలంగాణ ప్రత్యేక రాష్ట్ర ఉద్యమానికి సంపూర్ణ మద్దతు ప్రకటించి అనేక సభల్లో ప్రసంగించారు.

శ్రీకాకుళంలో జననం

స్వామి అగ్నివేశ్ 1939 సెప్టెంబర్ 21న శ్రీకాకుళంలో జన్మించారు. ఆయన అసలు పేరు వేపా శ్యామ్‌రావ్. నాలుగేండ్ల వయసులోనే తండ్రిని కోల్పోయారు. న్యాయ, ఆర్థికశాస్త్రాల్లో పట్టాలు సాధించి కోల్‌కతాలోని సెయింట్ జేవియర్ కాలేజీలో లెక్చరర్‌గా పనిచేశారు. సుప్రీంకోర్టు ప్రధాన న్యాయమూర్తిగా బాధ్యతలు చేపట్టిన సవ్యసాచి ముఖర్జీ న్యాయవాదిగా ఉన్నప్పుడు అగ్నివేశ్ ఆయన కింద జూనియర్‌గా పనిచేశారు.

ఉద్యమాలతో మమేకం

చిన్న వయసులోనే ప్రజా ఉద్యమాల వైపు ఆకర్షితుడైన అగ్నివేశ్ 1968లో ఆర్యసమాజ్‌లో చేరి సన్యాసం స్వీకరించారు. 1970లో ఆర్యసభను స్థాపించారు. 1977లో ఎమ్మెల్యేగా గెలిచారు. 1979లో విద్యాశాఖ మంత్రిగా పనిచేశారు. అప్పుడే 1981లో వెట్టిచాకిరీ నిర్మూలన కోసం 'బాండెడ్ లేబర్ లిబరేషన్ ఫ్రంట్'ను ఏర్పాటు చేశారు. ఢిల్లీ చుట్టుపక్కల క్వారీల్లో బానిసలుగా మగ్గుతున్న ఎంతోమందికి విముక్తి కల్పించారు. ఆర్యసమాజ్ అత్యున్నత మండలి అయిన వరల్డ్ కౌన్సిల్‌కు 2004 నుంచి 2014వరకు అగ్నివేశ్ అధ్యక్షుడిగా ఉన్నారు. ఐరాస ఆధ్వర్యంలోని బానిసత్వ నిర్మూలన ట్రస్టుకు 1994 నుంచి 2004 వరకు చైర్‌పర్సన్‌గా కూడా కొనసాగారు.

సీఎం కేసీఆర్‌తో స్వామి అగ్నివేశ్ (ఫైల్)

తెలంగాణ ఉద్యమానికి సంపూర్ణ మద్దతు

స్వామి అగ్నివేశ్ తెలంగాణ ఉద్యమానికి తొలి నుంచి సంపూర్ణ మద్దతు ప్రకటించారు. తెలంగాణ రాష్ట్రం ఇవ్వాల్సిందేనని జాతీయ, అంతర్జాతీయ వేదికలపై బలంగా వాదించారు. నాటి ఉద్యమ సారథి, నేటి తెలంగాణ సీఎం కేసీఆర్, తెలంగాణ సిద్ధాంతకర్త ప్రొఫెసర్ జయశంకర్ తదితరులతో సుదీర్ఘంగా తెలంగాణ ఉద్యమంపై చర్చించిన జాతీయస్థాయి నాయకుల్లో అగ్నివేశ్ ఒకరు. 2003 ఏప్రిల్ 27న వరంగల్‌లో జరిగిన టీఆర్ఎస్ వార్షికోత్సవ సభకు మాజీ ప్రధాని దేవెగౌడతో కలిసి వచ్చి లక్షల మంది ప్రజల సమక్షంలో తెలంగాణ ఉద్యమానికి స్వామి అగ్నివేశ్ మద్దతు ప్రకటించారు. 2010లో వరంగల్‌లో టీఆర్ఎస్ నిర్వహించిన తెలంగాణ మహాగర్జన సభలో కూడా పాల్గొన్నారు.

సీఎం కేసీఆర్ తీవ్ర దిగ్భ్రాంతి

స్వామి అగ్నివేశ్ కన్నుమూతపై ముఖ్యమంత్రి కేసీఆర్ తీవ్ర దిగ్భ్రాంతి వ్యక్తం చేశారు. తెలంగాణ రాష్ట్ర సాధన ఉద్యమానికి ఆయన మొదటి నుంచీ మద్దతుగా నిలిచారని గుర్తు చేశారు. ఉద్యమ సందర్భంలో జరిగిన అనేక సమావేశాలు, కార్యక్రమాల్లో పాల్గొన్నారని పేర్కొన్నారు. స్వామి అగ్నివేశ్ మృతికి రాష్ట్ర మంత్రులు హరీశ్‌రావు, నిరంజన్ రెడ్డి, నోబెల్ శాంతిబహుమతి గ్రహీత కైలాశ్ సత్యార్థి, కాంగ్రెస్ నేత శశిథరూర్, ప్రముఖ న్యాయవాది ప్రశాంత్‌భూషణ్ తదితరులు సంతాపం తెలిపారు.

స్వామి అగ్నివేశ్ ఇకలేరు

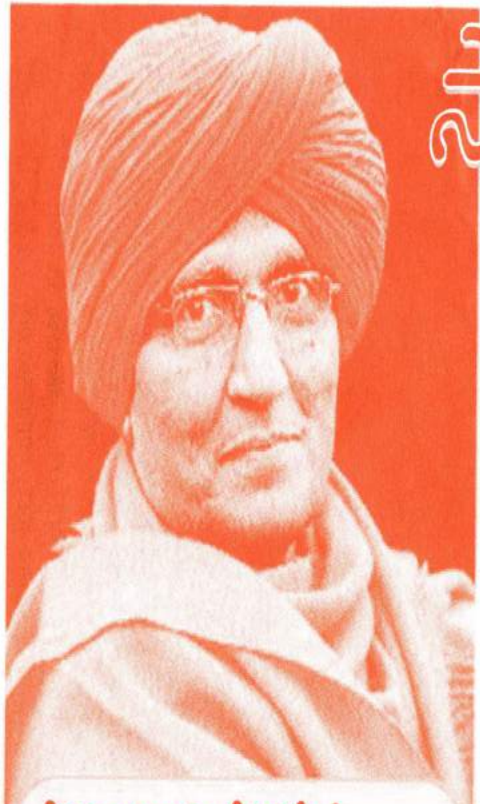

(మొదటిపేజీ తరువాయి)

అరెస్ట్ అయి ఆయన మృతిచెందినట్లు వైద్యులు ప్రకటించారు. శనివారం సాయంత్రం గురుగ్రామ్‌లోని అగ్నిలోక్ ఆశ్రమంలో వైదిక పద్ధతిలో ఆయన అంత్యక్రియలు నిర్వహించనున్నట్లు ఆయన సన్నిహితులు చెప్పారు.

శ్రీకాకుళంలో పుట్టి..

స్వామి అగ్నివేశ్ అసలు పేరు.. వేపా శ్యామ్‌రావు. ఆయన పూర్వీకులది శ్రీకాకుళం జిల్లా. ఒడిశా రాష్ట్రం గంజాం జిల్లాలోని తెలుగు కుటుంబంలో 1939, సెప్టెంబరు 21న జన్మించారు (అప్పట్లో శ్రీకాకుళం జిల్లాలోని కొన్ని ప్రాంతాలు ఒడిశా రాష్ట్రంలో ఉండేవి). వారిది సనాతన బ్రాహ్మణ కుటుంబం. అగ్నివేశ్‌కు నాలుగేళ్ల వయసులో తండ్రి మరణించారు. దీంతో ఆయన ఛత్తీస్‌గఢ్‌లో తన తాతగారింటికి వెళ్లిపోయారు. అక్కడే అగ్నివేశ్ పెరిగారు. చిన్నప్పటి నుంచి సామాజిక అంశాలపై మక్కువ పెంచుకున్నారు. కోల్‌కతాలోని సెయింట్ జేవియర్ కాలేజీ నుంచి లా, కామర్స్‌లో పట్టా పొందారు. ఆ తర్వాత.. ప్రముఖ న్యాయవాదిగా పేరొందిన సవ్యసాచి ముఖర్జీ వద్ద జూనియర్‌గా చేరి లా ప్రాక్టీస్ చేశారు. కానీ.. తన చదువుకు పరమార్థం చేకూర్చే ఉద్దేశంతో సామాజిక సమస్యలపై పోరాటానికి తన జీవితాన్ని అంకితం చేశారాయన. హరియాణాకు చెందిన స్వామి ఇంద్రవేశ్ భావాలకు ఆకర్షితులై అక్కడికి చేరుకున్నారు. తర్వాత అదే ఆయన కర్మభూమి అయ్యింది. చదువుకునేటప్పుడే ఆర్యసమాజ్ సిద్ధాంతాల పట్ల మక్కువ పెంచుకున్న అగ్నివేశ్ 1968లో ఆర్యసమాజ్‌లో ఫుల్‌టైమ్ వర్కర్‌గా చేరారు. రెండేళ్ల తర్వాత.. 1970లో, తాను సన్యాసాశ్రమం స్వీకరించిన రోజే.. ఆర్యసమాజ సిద్ధాంతాలతో 'ఆర్యసభ' పేరుతో ఒక రాజకీయ పార్టీని స్థాపించారు. స్వామి దయానంద సరస్వతి నుంచి గాంధీజీ, కార్ల్‌మార్క్స్ దాకా ఎందరో మహానుభావుల ప్రభావం తనపై ఉందని ఆయన చెప్పేవారు. రాజకీయ నాయకుడిగా హరియాణా హక్కుల కోసం ముందుండి పోరాడిన ఆయన.. పలుమార్లు జైలుకు వెళ్లారు. స్వామి ఇంద్రవేశ్‌తో కలిసి హరియాణాలో రైతులకు కనీస మద్దతు ధర, సంపూర్ణ మద్యపాన నిషేధం కోసం పోరాడారు. ఎమర్జెన్సీలో అజ్ఞాతంలోకి వెళారు. అత్యయిక స్థితి ముగిశాక.. 1977లో నిర్వహించిన ఎన్నికల్లో ఎమ్మెల్యేగా (హరియాణా నుంచి) ఎన్నికయ్యారు. 1979లో భజన్‌లాల్ కేబినెట్‌లో ఆ రాష్ట్ర విద్యా మంత్రిగా కూడా వ్యవహరించారు. ఆయన మంత్రి అయిన నాలుగు నెలలకే.. ఫరీదాబాద్ పారిశ్రామిక టౌన్‌షిప్‌లో పోలీసుల ఫైరింగ్‌లో 10 మంది కార్మికులు చనిపోతే నిరసన తెలిపి, న్యాయవిచారణకు డిమాండ్ చేశారు. దీంతో ముఖ్యమంత్రి ఆయన్ను రాజీనామా చేయమని అడిగితే.. వెంటనే చేసేసి తన జీవితాన్ని ప్రజాపోరాటాలకు అంకితం చేశారు. 1981లో 'బంధు వా ముక్తి మోర్చా' (బాండెడ్ లేబర్ లిబరేషన్ ఫ్రంట్) స్థాపించి వెట్టికార్మికుల విముక్తి కోసం పోరాడారు. కాలక్రమంలో ఆ సంస్థ దాదాపు 1.72 లక్షల మంది కార్మికులకు విముక్తి కల్పించింది. మావోయిస్టులతో చర్చలకు మధ్యవర్తిత్వం చేశారు. 1987లో రూప్‌కన్వర్ అనే మహిళను బలవంతంగా ఆమె భర్త చితి మంటలపై పడేసిన ఘటనకు నిరసనగా.. ఢిల్లీ నుంచి రాజస్థాన్‌లోని దేవరాలాకు 18 రోజుల పాదయాత్ర మొదలుపెట్టారు. అనంతరం రాజస్థాన్ సర్కారు 'సతి ప్రివెన్షన్ యాక్ట్'ను అమల్లోకి తెచ్చింది. రాజస్థాన్‌లోని నాథ్ ద్వారా ఆలయంలోకి దళితుల ప్రవేశంపై నిషేధం ఉండేది. 1988-89ల్లో స్వామి అగ్నివేశ్ దానికి వ్యతిరేకంగా పోరాడారు. 2002లో గుజరాత్ అల్లర్లు జరిగిన సమయంలో 72 మంది మతపెద్దలతో అక్కడికి వెళ్లి ఐదు రోజులపాటు అక్కడే ఉన్నారు. ఇలా ఆయన జీవితమంతా మతతత్వానికి వ్యతిరేకంగా, అణగారినవర్గాల వారి హక్కుల కోసం.. పోరాడారు. శ్రీకాకుళం జిల్లా సోంపేట థర్మల్ విద్యుత్ కేంద్రం ఏర్పాటుకు వ్యతిరేకంగా చేపట్టిన భారీ ఉద్యమానికి స్వామి అగ్నివేశ్ మద్దతు ప్రకటించారు. అప్పట్లో స్వయంగా సోంపేట వచ్చారు. అప్పుడే తన సొంతప్రాంతం శ్రీకాకుళం జిల్లా అని వెల్లడించారు. కాగా.. స్వామి అగ్నివేశ్ మృతి పట్ల పలువురు సంతాపం తెలిపారు. వెట్టిచాకిరీ నిర్మూలనకు ఎంతో కృషి చేశారని ఉపరాష్ట్రపతి వెంకయ్య గుర్తుచేసుకున్నారు.

తెలుగులో సంతకం

1986లో ఒక కార్యక్రమానికి హాజరయ్యేందుకు స్వామి అగ్నివేశ్ హైదరాబాద్‌కు వచ్చారు. ఈ సందర్భంగా ఆయనను జర్నలిస్టులు ఇంటర్వ్యూ చేశారు. అగ్నివేశ్ తెలుగు భాషను అర్థం చేసుకునే వారు. కానీ రాయడం రాదు. ఈ నేపథ్యంలో.. తన పేరు ఎలా రాయాలో నేర్పించాలని ఆయన జర్నలిస్టులను అడిగారు. పది నిముషాల పాటు సాధన చేసి, తెలుగులో సంతకం చేయడం నేర్చుకున్నారు.

మీరూ సన్యాసం తీసుకోండి..

హక్కుల ఉద్యమంలో భాగంగా స్వామి అగ్నివేశ్ ఒకసారి ఏపీకి వచ్చారు. అప్పుడు ఏపీ సీఎంగా ఉన్న ఎన్టీ రామారావు వద్దకు వెళ్లారు. కాషాయ వస్త్రాల్లో అగ్నివేశ్‌ను చూసి.. 'మీరు సన్యాసం ఎందుకు తీసుకున్నారు?' అని ఎన్టీయార్ అడిగారు. 'సన్యాసిగా ఉంటే ఎలాంటి స్వార్థం ఉండదు. మన కోసం కాకుండా ఇతరులు, సమాజం కోసం పనిచేస్తాం. మీరూ నిజాయితీగా పనిచేయండి. సన్యాసం తీసుకోండి' అని ఎన్టీయార్‌కు అగ్నివేశ్ సమాధానమిచ్చారు. అగ్నివేశ్ మాట ప్రభావమో లేక మరే ఇతర కారణమో.. ఎన్టీయార్ ఆ తర్వాతి కాలంలో కొన్నాళ్లపాటు కాషాయం ధరించారు.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-09-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

ఆర్య వీరుడు స్వామి అగ్నివేశ్ గారికి వినమ్ర శ్రద్ధాంజలి

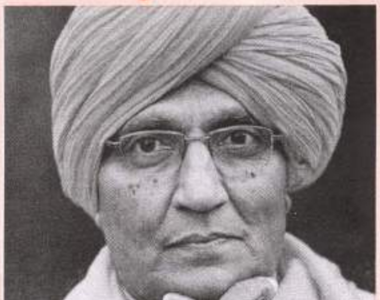

సార్వదేశిక్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు, ప్రజ్ఞాశాలి, క్రాంతికారి ఆర్య సమాజ నాయకుడు సామాజిక సంస్కర్త, ఉద్యమాల నాయకుడు, బడుగు బలహీన, వర్గాల సంస్కరణవాది, ఋషి దయానందుని అనుయాయి స్వామి అగ్నివేశ్ గారు 11-9-2020 నాడు అసువులు వీడడము చాలా దుఃఖాన్ని, బాధను కలిగిస్తుంది. వారు జీవితాంతము సామాజిక సమతుల్యత కొరకు బీద వర్గాల అభ్యున్నతికి, పర్యావరణ పరిరక్షణకు, ఆదివాసుల హక్కుల కొరకు, దయానందుని వేదధర్మాన్ని, దయానంద (ఫిలాసఫిని) సిద్ధాంతాన్ని ప్రపంచమంతట తెలిసేటట్లు ఎనలేని కృషి చేసారు. వారి జీవితమే సంఘర్షణ, వారి ఆయువంతయు సత్యాన్ని ప్రపంచానికి తెలియ పరిచారు, సామాజిక రుగ్మతలపై గళమెత్తి పోరాడిన ధీశాలి, ధీరసన్యాసి దయానందుని పరమ శిష్యుడు. బంధుముక్తి మోర్చా వ్యవస్థాపక అధ్యక్షుడు లక్షలాది మందిని వారు నగులుతున్న బాండెడ్ లేబర్ వ్యవస్థ నుండి విముక్తిని కలిగించిన నాయకుడు, సుప్రీం కోర్టులో బంధువిముక్తి మోర్చా జడ్జిమెంట్ రావడానికి వారే కారకులు. ఆడపిల్లలపై, అత్యాచారాలు, తల్లి గర్భము నుండే ఆడపిల్లల హత్యలు, నిరోధించడములో తీవ్రంగా పోరాడారు, సతిప్రథ వ్యవస్థపై తీవ్రంగా పోరాడి యాక్ట్ తీసుకురావడములో ఎంతో కృషి సల్పారు. వారికి దేశవిదేశాలలో ఎంతో మంది అనుయాయులు, ప్రభావితులు ఉన్నారు. **వారిలో ఒకరు నోబుల్ ప్రైజ్ అవార్డు గ్రహీత శ్రీ కైలాష్ సత్యార్థి గారు.**

స్వామి అగ్నివేశ్ గారి అసలు పేరు వేప శ్యాంరావు వారు 21 సెప్టంబరు 1939 శ్రీకాకుళంలో జన్మించారు వారు 4 సంగరాల ప్రాయములో ఉన్నప్పుడే వారి నాన్న గారు పరమపదించారు. వారి తాత గారి దగ్గర (అమ్మ తండ్రి) పెరిగాడు. వారు పోస్ట్ గ్రాడ్యుయేట్‌లో కామర్స్ మరియు న్యాయశాస్త్రములో డిగ్రీలు పొంది కొన్నాళ్ళు సెయింట్ గ్జేవీయర్ కాలేజ్ కలకత్తాలో ఉపన్యాసకునిగా పనిచేసారు. సవ్యసాచి ముఖర్జీ మాజీ ప్రధాన న్యాయమూర్తి గారి దగ్గర జూనియర్ న్యాయవాదిగా సేవలందించారు. విద్యార్థి దశలోనే ఆర్య సమాజ ప్రభావము వారిపై పడి సుశిక్షితుడైన దయానందుని అనుయాయిగా, నాయకుడిగా, సామాజిక సంస్కర్తగా మారారు. యుక్త వయస్సులోనే ఆర్య సమాజము వారిని కలకత్తా నుండి హర్యాణ రాష్ట్రానికి ఒక నాయకునిగా పంపించినది. 1968 ఆర్య సమాజ ఫుల్‌టైమ్ వర్కర్‌గా పనిచేయడము ఆరంభించారు, 1970లో సన్యాసము గ్రహించి మాజీ ఎం.పి. స్వామి ఇంద్రవేశ్‌తో కలిసి ఆర్య సభ పార్టీని స్థాపించి జయప్రకాశ్ నారాయణ గారితో కలిసి పనిచేసి, 14 నెలలు జైలు పాలయ్యారు. ఎమర్జెన్సీ తరువాత జరిగిన ఎన్నికలలో హర్యాణ స్టేట్ అసెంబ్లీ ఎన్నికలలో ఎం.ఎల్.ఎ. గా ఎన్నికై రాష్ట్ర విద్యాశాఖ మంత్రిగా పనిచేసారు. మహర్షి దయానందుని ఆర్య సమాజ ప్రభావము వారి జీవితముపై చాలా ప్రభావము చూపింది. ఫరిదాబాద్ ఇండస్ట్రియల్ టౌన్‌షిప్‌లో జరిగిన పోలీస్ ఫైరింగ్‌పై జ్యూడిషియల్ ఎంక్వయిరీకి డిమాండ్ చేసిన ప్రథమమంత్రి. స్లేవరీపై, మద్యపాన నిషేధంపై, సతిప్రథపై ధనిక బీద వర్గాల వత్యాసంపై అలుపెరగని పోరాటము చేసారు. మూడు మార్లు యునైటెడ్ నేషన్ ట్రస్ట్ ఫండ్ ఛైర్‌పర్సన్ ఆన్ కంటెంపొరరి ఫామ్స్ ఆఫ్ స్లేవరీపై సేవలందించారు. సతిప్రథపై 1987 వ సంగరంలో స్వామీజీ ఢిల్లీ నుండి డియా రాలా రాజస్థాన్ స్టేట్ వరకు పాదయాత్ర చేశారు. వారికి ఎన్నో నేషనల్ ఇంటర్‌నేషనల్ అవార్డులు లభించాయి. వారి మరణము ఆర్య సమాజానికి మరియు యావత్ ప్రపంచానికి తీరని లోటని, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ శ్రద్ధాంజలి ఘటిస్తూ వారి ఆత్మకు శాంతి కలగాలని ఆశిస్తూ భగవంతునితో వినయంగా ప్రార్థిస్తుంది.

-వెంకట్ రఘు రాములు, ప్రధాన కార్యదర్శి, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya • E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.